हम मौड़े दिन रात के

हम मोहरे दिन रात के

सुनीता

सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली

मूल्य पाच रुपए
प्रथम सस्करण अगस्त १९७१
आवरण सुशील वरम

राकेश जैन को

क्रम

बिरथा जनम हमारो

साथ वाले वकील साहब की आज शादी है। मेरा अभी विवाह नहीं हुआ और शादी-ब्याह के मामले में बहुत सेन्सिटिव हूँ।

वकील साहब का बंगला हमारे बंगले से इस तरह सटा हुआ है कि अपने बगीचे में बैठी मैं दीवार के टूटे हिस्से में से बहुत कुछ देख सकती हूँ। बहुत साल हुए, बरसात में बीच की यह दीवार गिर गई थी, फिर उठाई नहीं गई। हम लोगों में स्नेह इतना है कि आने-जाने का मार्ग सहल हो जाने से हम सब प्रसन्न ही हैं।

देखती हूँ कि पूरा आयोजन हो चुका है। बारात का समय हो चला है। लाल बजरी के अहाते पर दो मशकची पानी छिड़क रहे हैं और नाते रिश्तेदारों की खासी भीड़ हो गई है। जी में आता है वकील साहब से लड़ पड़ूँ। शादी में तो मैं जाने की नहीं। [माँ बिगड़ें, चाहे जो हो। भला कोई बात है कि वकीलनी आण्टी के मरते ही, दो महीने में वकील साहब दूसरा ब्याह रचा लें।

जैसा अनुमान था माँ मुझे बगीचे में बैठी देख प्रसन्न नहीं हुईं। आकर बोली 'अरे, शादी में चलना है कि नहीं। बैंड वाले आ गए। घोड़ी तैयार है, और तू किताब ही लिए बैठा है। कैसी लड़की है?

मुझे नहीं जाना है माँ। तुम जाती हो तो जाओ।

'आखिर कोई बात भी तो होगी न जाने की? पड़ोस का मामला है, ये लोग क्या कहेंगे? हमेशा की नाराजगी हो जाएगी।'

''तुम कह देना तबीयत ठीक नहीं है।'

'पर तू चलती क्या नहीं ? सब तो जा रहे हैं। फिर मैंने खाना भी नहीं बनाया है। भूखी रहेगी क्या ?"

मुझे तो आज भूख ही नहीं है। तुम भी कभी हो माँ ? वकीलनी आण्टी से तो इतना प्यार था तुम्हें और उनके मरने पर वकील साहब के दूसरे ब्याह में जा रही हो।

बेटा भाग्य पर क्या बस किसी का। कमला तो मुझे सगी बहन से भी ज्यादा थी कहते हुए माँ बराबर की कुर्सी पर बैठ गई।

'लेकिन वकील साहब से तो ऐसी उम्मीद नहीं थी मुझे कि इतनी जल्दी दूसरा ब्याह रचा लेंगे।"

'उस बेचारे को क्यों दोष देती हो ? उसका क्या सुख होना होगा। देखा नहीं बीमारी में कितनी सेवा की थी कमला की। ब्याह तो बच्चों की खातिर कर रहा है न कि अपने लिए।

यह तो सब बहाना है माँ। कभी सौतेली माँ से सुख होता है बच्चों को। इतना पैसा है आया क्या नहीं रख लेते ?

'कैसी बातें करती है। माँ माँ ही रहेगी नौकर नौकर। और सौतेली होने से ही क्या वह प्यार नहीं करेगी। सब एक से नहीं होते। तू तो गुस्से में है। अब बता वकील बेचारा घर को देखे कि काम पर जाए ? ब्याह हो जाएगा तो घर की चिन्ता से मुक्त रहेगा। मगर बुरी भी आ जाती है तो बच्चों का भाग्य। इतने ही भाग्यवान होते तो अपनी माँ क्या मरती बेचारी की। जब मेरा ब्याह हुआ था तो ब्याहली की गोद में तेरे बड़े भैया को बिठा दिया था, तेरी चाची ने। बेचारा डेढ़ वर्ष का था कुल। और पूछ ले जो एक दिन भी उसे दुख दिया हो। उल्टे तुम सबसे ज्यादा मुझे उसी की मुहब्बत है।

माँ से मैं जिरह में सदा हारी हूँ। माँ चली है और बारात भी चल पड़ी है। एक मैं ही अभी भी लॉन में बैठी हूँ। लाउडस्पीकर के गानों के मारे सिर फटा जा रहा है। सुना है, दिल्ली में तो अब शादी

मे लाउडस्पीकर लगने बद ही गए हैं। पर अपना मेरठ अभी इतना 'माडन' नही हुआ। सो 'में में' की आवाज करते घिसे पिटे गाने बज ही रहे हैं। पता नहीं, दूसरो का चन छीन लेने वाला पर म्युनिस्पलिटी टक्स क्या नही लगाती।

नई वकीलनी आज दोपहर ही आ गई। नवजात शिशु और वधू दो चीजें देखने का लोभ मैं कभी सवरण नही कर सकती। अपनी नाराजगी को ताक पर रख कर भी बहू देखने गई। अधिकतर नई बहू का घेरघार कर सारा कुनबा बठा रहता है। पर वकीलनी एक तरफ लाल धोती म सिकुडी-सी बठी थी। माथे पर नाक तक का घूँघट था। मैंन उठाकर देखा और देखता ही रह गइ। कठिनता से सत्रह अठारह बरस की होगी। री रोकर आँखें सूजी थी और चेहरा बडा स्वस्थ भरा भरा था। वह सिर झुकाए बठी ही रही। देखा कि घर म बहू के प्रति विशेष कौतूहल नही है। थोडी चुहल है। एक तो बचारी दूसरा थी तिसपर गरीब गाँव घर की। दहज के नाम पर कुछ एक सूता धोतियाँ बमश्ह ही लाई थी। वहा भी किसी को कुछ आशा नही थी। सो सब खाने पीने म मग्न थी। थोडा-बहुत कौतूहल यदि किसी का था तो बच्चा का—वकील साहब के छ बच्चा का। बारी बारी स आकर व अपनी नइ मा का दखते और चले जात। उम देखन म आशा से अधिक भय था जो 'सौतली' शब्द स उपजा हागा।

मैं जितने गुस्से म गइ थी वकीलनी को देखकर उससे कहा अधिक आक्रोश मे भरी लौटी। आत ही माँ स उलझ पडी। 'देख लिया न मा वकील साहब को। तुम तो कहता था बडे बेचार हैं। क्या हक था उन्ह एमी बहू लाने का ?"

"क्या, क्या हुआ ?'

'हुआ क्या आप तो कब्र म पर लटकाए बठे हैं और बहू लाए हैं सत्रह बरस की। मुझ मे भी छोटा।"

'शम कर। क्या अशुभ बोलता है ? चालीस का ही तो है।"

'गुड्डू ! मेरे ज़माने का हुआ कि नहीं ? सिफर के बच्चे भी उसे पालने होंगे। वह तो मेरा बच्चा-सा है। गजब की माँ नहीं, बहुत अच्छी है। मुझे तो ऐसा बोध हो रहा है कि क्या बताऊँ। मन कहा माँ विधुर से ब्याह होने में बुरा नहीं सकता ?'

माँ कुछ बोला नहीं। अब भाभि का पाना पाने में दिल्ली के रोशन का ज्यादा लम्बा उगाया तो मैं चुप। हाँ ! ममा माँ के ऐसा बात कर जाती है। हार बचाता मैं वहाँ से उठ गई।

वकील साहब और हमारे घर के बीच एक ट्रांसमीटर लगा हुआ है जिससे दोनों घरों की मिनट-मिनट की स्थिति रनिंग कामेन्ट्री की तरह हम मिलता रहता है। यहाँ समझ लाए। वह हमारी महरा है व जुगनी। यह हमारा जाता-जागता ट्रांसमीटर है। सबसे पहला खबर थी 'विस्फोट' नई बहू एक दम छोटे घराने की निम्नवर्ग आचार-विचारों का। बहुधा इतना कि ब्याह के पहले दिन ही घूँघट को तिलांजलि दे चलता पाठ में ताश मशाली बना घूम रहा है और एक-एक कर महीना से ठहरा चाचा, बुआ मौसिया का बिदाई दे रहा है। सुनकर आश्चर्य हुआ। आश्चर्य ने पाँव का काम किया। जुगनी अम्मा और बिटिया हैरत क्या। उसे क्या पता वह घर की बहू-बिटिया का सहूर कायदा। गाँव में धन्धा चला दो जून का खा लिया। मा यहाँ भी यही करने लगा। दस लना दो दिन में ही मिस्सर (रसोइया) को भी छुट्टी दे दगी। अब गए पहली वकीलना के दिन। अब बच्चों का भगवान ही मालिक है।

मुझे भी चिन्ता बच्चों की ही था। खासकर सबसे छोटा पिन्टू में तो मैंने अपनी जान बसा छोड़ी थी। मगर वकीलनी ने उसे मारा तो ? तो मैं क्या कर सकूँगा। वह तो माँ है उसकी। चल थे न दूसरा ब्याह करने अब लें मजे।

दोपहर को फिर कामेण्ट्री हुई। वकील साहब तो सिर्दपिदाए से कोर्ट चल गए है। रिश्तेदार भी सब जा रहे हैं और 'मल्ला रानी

सारा घर साफ करवाने में लगी है।

शाम को बिन्ना उधर से निकला। मैंने पकड़ कर पूछा, "अरे बिन्नू, माँ कैसी है?

पता नहीं।' वह भाग गया। मैं असमंजस में ही रह गई।

ज़रा दिन चढ़े सोकर मैं उठती हूँ। अगले दिन उठ घर की दरार में झाँका तो धक्का सा लगा। वकील साहब के यहाँ बड़ी शान्ति थी। बच्चों का कोलाहल सुनाई नहीं देता था। रोज़ तो लान में लड़ते-भगड़ते खेलते रहते थे सब।

दसक बजे फिर उधर निगाह गई। देखा पाँचों लड़के नहाए धोए बरामदे में कतार बाँध बस्ता पट्टी लिए बैठे हैं और गिरधर शास्त्री स्टूल पर बैठे उनका काम जाँच रहे हैं। बच्चे कोई विशेष प्रसन्न नज़र नहीं आते, गर्मियों की छुट्टियों में विद्यारम्भ देखकर कुछ सोचूँ कि इसके पहले ही 'खबरें' आने लगीं।

जुगनी ने आकर बताया, जो कहा था वही हुआ न आखिर। मिस्सर की छुट्टी। चौका चक्की खुद सभाल बैठी है। और मिस्सर के बदले शास्त्री जी बुलाए गए हैं। बच्चे बेकार झंझट में फँसा दिए गए हैं अभी से। बेचारे!'

दोपहर कोई दो बजे राजेश माँ से सिलाई की मशीन माँगने आया। माँ ने आश्चर्य से पूछा, 'क्यों रे, क्या करेगा मशीन का?"

"वह, वह जो माँ है न। उन्होंने मंगाई है ताई। मुन्नी की और गुड्डू की बनियान-जाँघिया सीएँगी।'

"इतनी धूप में? क्या की तो गर्मी है। भला यह क्या टाइम है कपड़े सीने का? सुबह से क्या कर रही थी?"

'सुबह तो खाना बना रही थी। मिस्सर जी तो चले गए न।"

'अरे हाँ, मैं तो भूल गई थी। रज्जो बेटा भला यह मिस्सर को क्यों निकाला उसने? कब से तो था पड़ा रहता।"

'पता नहीं, ताई।'

राजेश मशीन ले गया। माँ बडबडाई 'मुझे तो रग ढग ठीक नजर नही आते। ऐसा तो न कभी देखा न सुना। जब देखो काम म ही लगी रहती है यह लडकी।

उसके कोई दो दिन बाद पिण्टु मेरी गोद म बैठी थी। मै कोई पत्रिका देख रही थी। माँ ने पूछा ए पिण्टी तेरी माँ क्या कर रही है?

पूजा कर रही है भगवान की। ताई माँ ने बडा अच्छा मन्दिर बनाया है। कृष्ण भगवान रखे हैं। रोज पूजा करती है। वह रात म भी वही सोती है। कल से तो मैं भी वही सोऊगी। मन्दिर म सोने से रात को डर नही लगता।

माँ कुछ देर चुप बैठी रही और फिर एकाएक चप्पल पहनकर वकील साहब की ओर चल दी। माँ तो अक्सर वहाँ जाती ही रहती थी।

मैं पत्रिका पढ़ती रही और बोर होकर पिण्टु मेरी गोद म [illegible] सो गई। मैं उसे [illegible] से लगाकर उसके घर म [illegible]। पिण्टु को [illegible] पर लटा कर मुझे कुछ देर उस [illegible] भी [illegible] क्योंकि वह जाग गई थी और मेरा आँचल छोडती ही न[illegible] थी।

कुछ ही क्षण बाद हाथे कि [illegible] के [illegible] म बराबर के कमरे [illegible] म माँ की आवाज [illegible] [illegible] अपना [illegible] रखा कर [illegible] है बीमार पड जाएगा।

[illegible] [illegible] मैं [illegible] हूँ। [illegible] [illegible] म [illegible] गई [illegible]? माँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाड़ [illegible] है।

[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] म [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] बनात [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिया?

क्या करूँ। घर की सफाई करायी तो एक का भी तस्ली नस्ता साबुन नहीं मिला। लगता है, महीनो से इन सबने कुछ पढा ही नहीं। अभी क्चाई निकल जाएगी तो अच्छा है।"

बहू यह मंदिर कब बना लिया तूने ? और यह अपनी क्या हालत बना रखी है। न तन पर ढंग का कपडा न वाली, न झुमका।'

यह तो जीवन के साथ है अम्मा सिंगार करके क्या करना है ?"

'और तू सोती भी यहीं है ?' माँ ने हौले से पूछा। मानो कठिनता से इतनी देर रह सकी थी।

।"

"वकील साहब कहाँ सोते हैं ?'

'अपने कमरे में।'

बैठक में ?"

'जी।

'यह क्या बात हुई ? तू बच्चो को लेकर अलग पडी रहती है। और तेरे ब्याह को दिन ही कितने हुए हैं। लडाई हो गई क्या ? अभी नहीं खाए पहनेगी तो फिर कब ? झगडा हो गया हो तो मुझे बता ?

देख, कोई बात हो तो मुझे बता। तेरी मां के बराबर हूँ तर से पहले जो थी वह भी बहुत मानती थी। बचपने में आकर कुछ न कर बैठना।"

उधर से धीरे धीरे सिसकने का स्वर आने लगा। पिण्टू को थपकता मेरा हाथ एक बारगी थम गया। अरे ! माँ उसे सहला कर सांत्वना में कुछ कह रही थी। क्या बात हुई समझ नहीं आई। फिर सिसकियों में नई बहू की आवाज उभरी 'ब्याह की रात कहने लगे मेरे बच्चो का खयाल रखियो। यही तेरे भी बच्चे हैं। ईश्वर के दिए पहले से हो छः हैं। इसलिए इन्तजाम कर आया हूँ। परसों ही आपरेशन करवा लिया है अपना।'

'क्या ? वकील साहब ने आपरेशन करवा लिया ? शादी से पहले ही ?

हाँ, माँ जी । लेकिन एक बात का उनका एहसान है कि पहले ही बता दिया । नहीं तो गल-गल कर मैं मरती । अब तो पेट बच गई । यह शरीर भगवान को सौंप दिया है । उन्हें चढ़ा दिया है । नहीं तो यह देह कलंकित हो जाती झूठा हो जाती माँ ।

कैसी बात कहती है बहू ?'

ठीक कहती हूँ माँ जी । ज्यादा पढ़ी लिखी मैं नहीं हूँ । शास्त्र कुछ पढ़े हैं । उनमें लिखा है स्त्री और पुरुष में शरीर का कर्म सन्तान की इच्छा से ही होना चाहिए । अन्यथा वह दुष्कर्म होगा व्यभिचार होगा । जब सन्तान होनी ही नहीं फिर यह कर्म कैसा ? यह तो अधम है घोर पाप । मैंने उन्हें कह दिया है कि जिन्दगी भर तुम्हारी सेवा करूँगी तुम्हारे बच्चों की भी माँ की तरह पालूँगी पर शरीर मेरा मत छूना कभी भी । वह तो मैं अर्पण कर चुकी हूँ कृष्ण महाराज को ।

इसके बाद एक हृदय विदारक सिसकी सुनाई दी । फिर आवाज आई बड़ी घुटी सी थकी सी जो आवाज से अधिक आह थी ।

उनके मेरा जाना का दुख लाने इन्होंने दिया मौ—एक मर्द भी दिन तो जीवन सफल न हो जाता । विरथा तो न जाना ।

उसे रुलाई को सुनने की शक्ति मुझ में नहीं थी । मैं कमी-की कमी बनी बैठी रह गई समझ न पाई भाग जाऊँ या सुनती रहूँ ।

पार्वती जब रोएगी

सिगरट का पकेट जेब से निकालते हुए उसका उगलिया अगूठा की डिबिया स टकरा गइ और जब म ही ठिठक गइ। सोनिया का कार बाई ओर मुड कर ओभल हो चुकी थी। शाम क घिरते अधकार म शिकागो की भीमकाय घु धली कसाई इमारतो क साया मे दबा वह एकाएक थका-सा हो आया, पोर-पोर म थकावट एस रिस आई कि खडा रहना दूभर हो गया। पर घसीटता वह "इटर-नशनल हाउस' की सीढियाँ चढ़ने लगा, "हैलो', किसी न कहा।

हैलो ' बिना देखे हा उसन जवाब दिया।

सान की सादा अगूठी! अभी तो सोनिया पसन्द कर गई थी। परसा वह उसे पहन लगी, परसो वह उस पहना दगा।

शर्मा सामने से आ रहा था वह कतरा कर अपन कमर की तरफ बढ गया।

साला उसक मुह म एक शब्द उभरा। उसे देखत हो शर्मा का आखा म जो एक घिनौना वासना भरा प्रश्न उभर आता है उस वह सहन नहीं कर पाता और कुछ कह भी तो नहीं पाता। शर्मा की मिचमिची आखो और युवावस्था के मुहासो के दागो से भरे चेहरे पर वह प्रश्न लपलपाता रहता है।

पहन वह मिलत हा कन्धे पर हाथ मार कर पूछता था "है न गौरा चमडा कमाल की चीज? दोस्त तू बडा किस्मत वाला है आन ही बढ़िया माल हाथ लगा है। यहाँ चार साल म सब घिसी पिटी ।

मा, पिता जी, कम्मा, विम्मा और मनो स्वयं वह और पावती।

'कम्मा जरा उसे भेजना ता," कमरे में खाने की थाली लेकर घुसते कम्मा से उसने कहा था।

'वह भाभी तो " मावली कम्मा लाज पड़े हाथ काटती नीचे उतर गई थी।

हाथ का हैंगर पलंग पर पटकते वह बेहद झुंझला गया था। वह अलग है कम्मा का आधा वाक्य बेरंगा मुंह बना उसने पूरा कर दिया था।

नीचे किसी कोने में टाट पर गठरी बनी पड़ी होगी। अखबार पर रख खाना खाएगी और मिट्टी के बर्तन में पानी पीएगी। जाहिल! उसने दांत पीसे थे, जाने पावती पर घर पर माँ की छुआछूत पर या कि सारे धमपुरे पर, सारी दिल्ली सारे समाज पर।

धमपुरे से उसे नफरत था सख्त नफरत। गली में पर रखते ही नाक पर रूमाल रख वह सिकुड़ा सिकुड़ा गंदगी और खिड़कियों में पक गए कूड़े में बचता, आवारा गाय भैंसों से कतराता चलता था। यहीं वह पैदा हुआ था यहां खेला था, पर हर दिन के साथ उसकी घृणा यहाँ के लिए बढ़ती ही जाती थी।

छत पर बैठा वह मोटी मोटी किताबें लैम्प के प्रकाश में पढ़ता, माँ की कराहट और पिता जी की दमा खांसी को सुना करता। जाल के नीचे रसोई घर से आती-जाती तीनों बहनों के मुर्दा शरीर और पीले चेहरे उस जहर से लगते थे।

कभी सीधे मुंह वह उनसे बोलता नहीं था। बेचारी सहमी रहती थीं उससे। वह चाहता था कि वे पढ़ें कुछ करें घर में खाली न पड़ी रहें। मनको टी० बी० हो जाएगी। टी० बी० उसका मन चिल्लाता। पर कहां जाए वह?

गली में आवारा गुण्डे हर पनवाड़ी के यहाँ जमघट लगाए रहते हैं। उनके छज्जे की ओर मुंह कर सीटियाँ बजाते हैं, पान से रंग होठों

पर जाभ फरत है। विस विस स सड यह। लड़ने सायक हो भा ता। नाली के ग द काड और मज पर मक्खा द मारता।

सच ही ताना का टा० बी० हा जाएगा और एम० एस-सा० म पन्न वाल उसन उस माट मारवाडा की चार फुट आठ इच का मन-पढ़ दुबली लडकी स बिना यू-चरा किए न्याह की हा भर दा था। मन्ना और विम्मा दोनो का ब्याह एक सप्ताह आग-पीछ हो गया था एक का सवड दूसरी का रिवाडी।

मां खुश नही थी। गाव म लडकिया जाए और वह भी दहातिया क यहाँ। शहर म क्या बाबू लडक नही थ? थ तो किन्तु य भा सव गन्दी गली कूचा सठ माली बाडे म रहत थ। जहाँ कबूतर और इन्सान वन्दू और धुआँ साथ-साथ पनपते है जहाँ पाखाना का मन कठपुतले सिर पर न्नात है जहाँ टी० बी० के कीटाणु सासा म जात है। नही मन्ना और विम्मा साफ हवा म रहगा गन्दगा भरे इस वातावरण स दूर।

करवट बन्लत उसे लगा पावती वहा कमरे म धरता पर लाल दुशाल म लिपटी पडी है। पसीन स और घू घट स फला बिन्दा रात से सूनी आँखें पपडाए होठ महदी की बासा ग ध भरा हथली जिसमे सकडो पतली आडी तिरछी लाइन खिची थी और सुबकिया म उठता-गिरता पावती का वक्ष।

पावता। अरे उमा ही हो जाता नाम। कॉलज म साथ पढता था विभा रचना अचना सध्या निशा घर म पावती। पारो भा ता क्स वह? विमल राय प्रोडक्शन्स का पारो—कहाँ वह सुचित्रा सन और कहाँ यह? नही पावता पावता हा थी। फिर नाम न्ना ही कब होता था। वह बोलती जो नही थी। हा हूँ जा किया करता थी। गुरु म तो वह भा नही। हाथ लगाया ता रा पडा। बडी नाज होता था उस कभी-कभी।

पन्ल न्नि शान्ा न द राज बाद जब उस उसन अपन कमर म

बठ पाया था ता थाडा भ्रचकचाया था। यह नहा कि वह विवाह म उस विदा करा लाकर भूल गया था। सिफ उसे विशेष उत्सुकता नहा था। इस घर म मा क नियम-बन्धन थ। वधू उसका हुई तो क्या जब माँ ठीक समझेगी, उसे भेजेगी। पर बाद म लगा कि पावनी खुद ही आई नहा होगी रोई होगी। घूघट उलटने न उलटने उसका हृदय से पिग्घी बध गई थी।

वह याघ था क्या? वह अग्रेजी के बहुत उपन्यास पढ़ता था अग्रजी की फिल्म दखता था कि सही-सही चुम्बन कसे किया जाता है उसका सब सक्स नालज रखी रह गई थी। पावना न शायद इस विषय म कभी सुना ही नहा था। सुना था तो जान क्या? घुटना म मुह छिपाया कि जो उठता नहा था, भ्रकडता हा जाता था। थक कर वह पलग पर सो गया था। पावनी वहा गठरी बना बठा रही था, कितना ममझान-बुझान पर भी नहीं आई थी।

लटे-लटे उसक शरार म वही दापहर वाला बिजला कौंधन लगी वहा उफान। सानिया क समान और सेंट का मिली-जुली गध। गध कि जो पहर पहल उसन 'बाब पार्टी' क अवसर पर अनुभव की थी। तब भी वह घूप स भ्राट किए अनमना-सा लेटा था, धमपुरा की ही सोचना, माँ के, बम्मा क, शायद पावनी क सम्बध म सोचना-सा। वह उसक करीब रन म पसर कर बठ गई थी।

तुम क्या सोच रह हो?" मुँह स सिगरट निकाल वह उठ बठा था परेशान-सा।

'कुछ नहा, कुछ नहा।'

क्या सुनहरा दिन है। थाडा तराना?'

'म? मैं ता तर नहा सकता।'

पर कम्हा मैं तर आऊ बडी गर्मी है।' उसक पास हा खडे हा उसन एक झटक स जिपर खोल अपना पतली सूती फ्राक उतार दा थी। नाच वह नार-सफेद धारा का वनिंग सूट पहन था। नान रग म गारा

'पर तुम सचमुच चाहते हो क्या ?'

हाँ सोनिया हाँ।

शर्मा ने एक बार कहा था 'दोस्त, यहाँ जरा बच कर चलना। ये लोग इस्तेमाल के लिए हैं बाँधने को नहीं। पकड़ाई में आ गए तो बंध जाओगे फिर छुट्टी नहीं। रस्तोगी इसी चक्कर में फँसा बेचारा फिर भी ।'

सोनिया हम इसी सप्ताह रजिस्ट्री करवा लें।

एकदम इतनी जल्दी क्या है ?

''नहीं इसी सप्ताह ।

हाँ, उसे जल्दी थी, शर्मा की विजय वह नहीं होने देगा। किसी को पता चलने से पहले वह विवाह कर लेगा। फिर उस उस धर्मपुरा में नाली के कीड़े सी जिन्दगी में लौटना ही क्यों है लौटना भी कैसे और क्यों ? ''सार्इंटिस्ट्स पूल में बहुत होगा चार सौ की नौकरी मिल जाएगी। उतने में रिटायर्ड पिता, बीमार माँ को लेकर कहाँ रह सकेगा दिल्ली में। यहाँ से दस हजार रुपए कम्मो के ब्याह को भेज चुका है। दो ढाई सौ रुपए महीना तो यूँ ही भेज देता है।

कमरे में सिगरेट का धुआँ भर गया था। हलक की गंध से उसे मिचली होने लगी। उठा कि कुछ खा ही लिया जाए। डिनर तो नहीं मिलेगा अब काफी-केक ही सही। बाब का कमरा वैसे ही बन्द था। कई अफवाहें उठी थीं कि उसका प्रोफेसर से अनबन हो गई था उसने आत्महत्या कर ली क्योंकि उसका एक्सपेरीमेंट सफल नहीं हो रहा था। वह ''मेंटली डिस्टर्ब'' था। बाब ! बहुत मेधावी था वह लड़का। आँखों पर मोटा चश्मा चढ़ाए वह कुछ न कुछ करता रहता था हरदम। किसी ने कहा उसका ब्रेक डाउन हो गया ओवर वर्क से।

कफेटेरिया अब तक खाली हो गया था। एक नीग्रो लड़की मेजों की सफाई में लगी थी। काफी और केक ले वह एक कोने में बैठा।

भूख थी पर खाना दूभर हो रहा था।

वह अमरीका जाएगा, सुनकर पावती ने तुलसी का चौरा छत पर अपने कमरे के बाहर लाया था। छत की यह बरसाती उन नानी का कमरा थी। ऊपर टीन की टाड में घर का फालतू सामान भरा था। गद्दे रजाई जो मेहमानों के लिए बनाए गए थे, फालतू बरतन पुराना चर्खा गरम कपड़े, दिवाली की हटड़ी खिलौने। वह ठीक से जाए और ठीक से लौटे, इसी से पावती तुलसी के नीचे दीपक जलाती थी, पूजा-अन करती थी और जाने के समय वह उसे देख भी नहीं पाया। वह अनशन थी सात दिन की। उन फालतू नान्नाई सौ रुपयों को भी उसे अपने हाथ से सौंप नहीं सका जो सब खर्चे के बाद उसके पास बच रहे थे। उसके सन्दूक में ऊपर रखकर चला आया था। नहीं उसे पावती से प्यार नहीं था। उस अनडवेलप्ड लड़की से भला किसे प्यार हो सकता था।

काफी के कड़वे घूंट निगलता वह सामने बैठी वाव की गर्ल फ्रेंड सूजी को बाव के पक्के दोस्त जाज के साथ बातें करते देखता रहा। दफ्तर के समय भी वे दोनों साथ साथ खड़े थे। जब सूजी रोई थी तो जाज के कन्धे पर सिर रख कर। किन्तु पावती जब राएगी तो तो किसका कन्धा होगा कौन होगा।

कमाई

आज सुबह से उसके सिर म हल्का दद है। बडे ही बेमन से वह जल्दी-जल्दी तयार होकर घर स निकली। निकलते निकलते दरवाजे के पास लगी लटर बाक्सों की कतार म अपने लटर बाक्स में झाँकना नही भूली है। जानती है डाक दो बजे से पहले कभी नही आती और अभी आठ भी नही बजे हैं, पर उसका मन घर से आने वाली चिटिठया मे भटकता फिरता है। मुश्किल सबसे बडी यह है कि छ-सात रोज के इन्तजार पर चिट्ठी आती है और मिनट दो मिनट मे पढी जाती है। जसे हा पढ़ कर रखी जाता है, नई चिटठी का इन्तजार शुरू हो जाता है।

कभी कभी तो उसे लगता है कि दिन-ब दिन जिन्दगी बन्द होती जाता है और चिटिठयाँ दूर के घटाघर की आवाज। उसे लगता है कि जो यथाथ है वह भ्रम हुआ चला जा रहा है और जो वास्तव मे भ्रम है वह यथाथ-सा उस जकडे है। वह डर जाती है।

अप्रेल का महीना है। सुबह की हवा म अभी ठण्डक बाकी है। मग्व पर आ उसने स्वेटर के बटन बन्द करते हुए घडी का तरफ देख लिया है। बस आने म दस मिनट और हैं। वसे तो हस्पताल दूर नही और वह पदल भी जा सकती है पर इस देश मे उसे लगता है कि पग्ल कोई चलता ही नही। एक-आध बार पदल गई तो उस बेहद अकेलापन महसूस हुआ और फिर कितने ही लोग बाद म पूछते हैं आशा, आज सुबह तुम्हें वाईन स्टीट पर देखा था मैंने हान भी

जिया पर तुमने देखा ही नहीं। कहाँ जा रहा था इतनी सुबह ?''

कहीं नहीं, जरा स्टोर तक जा रही थी...।'

वह टालती रही है अब तक। सुबह की धूप में चमकती अपना यूनीफाम और सफेद रबर के जूते देख, वह थोड़ी कतरा गई है और किनारे से हट पड़ के बीच हो गई है। कम हो या ज्यादा है। किनारे खड़ा थी कि सर-से खोसला की गाड़ी बगल से निकल गई। वह सट कर रह गई थी। वह तो अकेला था, शायद उसे पहचान नहीं सका होगा। सड़-सड़ एकाएक उसे अपने पर बेहद दया आने लगी है और जा है कि घर लौट जाए और खूब रोए। पर बस आने में पाँच मिनट बाकी हैं और उसे काम पर जाना है।

सामने की डोनट-कॉफी शाप से एक आदमी आधा खाया डोनट हाथ में लेकर बस स्टाप की तरफ बढ़ा आ रहा है। वह मन ही मन में हिसाब लगा रहा है कि देश में इस समय शाम होगा। घर पर खाना बनकर तैयार हो गया होगा और माँ बारा-बारा सबको बना रही होगा... अरे शामू अपने बाबूजी को बुला कि खाना तैयार है और गुड्डो रसी को भी बुला भई। मैं क्या सारा रात यहीं बैठा बैठा रहूँगा...। और फिर बहन आइयो का शोर... हम यह नहा खाते... हम गाभी अच्छी नहीं लगती भिण्डी क्यों नहीं बनाई, कल ही तो बनाई थी, रोज रोज वही बनती तो...।'

''तेरे बाबू जी बिगड़ेंगे अब खा ले गुड्डो। ये लड़के अभी कर ले ससुराल जाएगी तो रोज याद करेगा माँ के हाथ का खाना...।

उसके सिर का दर्द बहुत बढ़ गया है। सामने से बस आती दिखाई नहीं दे जाती तो वह जरूर मुड़ कर घर वापस चली जाती। चाहे फिर जो भी होता। बस वाईन स्टाट से चल हार्न्डरिज पर बाएँ मुड़ी। सामने का घर वहाँ से दिखाई देता है। खोसला नया-नया आया है यहाँ। डिटराय से आते ही उसने बड़ा-सा आलीशान मकान खरीदा है। दो-दो कारें रखी हुई है। एक सुन बनाता है। दूसरा

बाबा के पास रहती है। काइ कह रहा था उस बीस हजार डालर सालाना मिलते है। बीस हजार डालर डेढ लाख रुपया साल। उसन हिसाब लगा लिया है और एक लम्बी सांस छोड दी है। इतना कमा रहा है और फिर यहा बसा हुआ है। वह सोचती है कि उसे इतना पसा मिल तो फौरन बिस्तर गोल कर दिल्ली का ही टिकट कट-वाए।

हस्पताल की सोलह मंजिला इमारत दूर से दिखाई देने लगी है। उसकी उगली उसके नाक के सूने छेद पर आकर तनिक रुक गई है और हाथ उसने गोदी म गिरा लिया है। छ या सात बरस की थी वह। आगरा मामा के यहा गर्मी की छुटिटया म गए थे। इस बात को भी अठारह साल हो गए। नाक कान बीधने वाला उनकी गली मे आया था। मामी न कहा कि लाओ लगे हाथ लडकी की नाक बिंधवा ली जाए। मा का तो ज्यादा इच्छा नही थी पर वह स्वय ही उतावली हो गई थी

नही माँ, कप्पो और गुनो की तो नाक म लौंग है हम भी पहनेंगे।"

नाक बिंधवाई जरा भी रोई नही और तीसरे दिन उसकी नाक पर खूब बडा दाना बन गया था।

कप्पो और गुन्नो ने खूब छेडा उसे। 'जरूर तूने चने खाए होंगे — तभी नाक पर चना उगा है। हमने मना नही किया था।

और जब धागा कटा तो आँख से झर झर पानी बह गया था। छेद म मामा ने नीम के सूखे तिनके को पहले तेल म नरम कर फिर थूक म भिगो भिगो कर उसे पहनाया था।

दिल्ली के लिए जब व वापस चलने लगे थे तब मामा न हल्का-सा कन्द बाराक हीरे की कणी की लौंग ला दी थी जो माँ न उठा कर रख दी थी। कोई चार बरस पहले जब वह बी० ए० के पहले वर्ष म थी वह लौंग उसे पहनने को मिली थी और तब से वह उसे

हो रही थी। पर परसों एक साथ में काम करने वाली पूछ बैठी 'अरे यह नाक में क्या पहना है ?' बात अनसुनी कर वह खिसक गई थी। जानती थी कि साथिन पूछेगी 'तुम कहाँ की हो' और उस कहते हुए लाज लगती है कि वह 'इण्डिया' की है।

उसे जब यह नौकरी मिली तो पहले दस दिन उसे बच्चों के वार्ड में काम करना पड़ा। वह काम उसे कतिक बुरा नहीं लगा। कुछ व्यस्तता, कुछ नयी-नयी नौकरी ने उसे सोचने या महसूस करने का मौका ही नहीं दिया। पिछले पाँच दिन से उसकी बदली वृद्ध व मानसिक रोगियों के वार्ड में हो गई है। पहले ही दिन से उसे वहाँ बेहद बुरा लगता है। उसे अपने पद की हीनता का एहसास एकाएक बहुत अधिक हो गया है। उसे लगने लगा है कि वह अपने प्रति अपने देश के प्रति कुछ लज्जाजनक काम कर रही है। वह रात रात भर सो नहीं पाती है और थकावट से टूटते शरीर को उसका जी होता है किसी गहरे से तालाब में डाल दे जहाँ से वह पूरी की पूरा स्वच्छ होकर निकले।

बस हस्पताल से एक ब्लाक दूर रह गई। एक कम्पन उसके शरीर में होकर चला गया। जाते ही उसे हैडनस के साथ उन दोनों अति वृद्ध रोगियों के बिस्तर लगवाने होंगे और फिर उन दोनों को नहलाना होगा। मल मूत्र के पन उठाने का तो शायद उसे फिर भी धीरे धीरे आदत पड़ जाएगी पर रोगियों को नहलाने में उसके शरीर का रोमाँ रोमाँ घृणा से भर जाता है। फिर उस इस सबकी ग्लानि नहीं। वह बुढ़ा बेहद भारी है और उससे सम्भलती नहीं है। हैडनस को परसों काफी शिकायत उससे थी। कहाँ छः फुटी वह अमरीकन औरत, कहाँ एक सौ पाँच पौंड की वह खुद। पर किसी से कह भी तो नहीं सकती। डर लगता है कि कहीं घर तक बात न चला जाए।

पिता जी को बहुत बुरा लगेगा। वह सोच भी नहीं सकते कि आशा ऐसा काम करती होगी और तिस पर गौड ब्राह्मण होकर।

पर अवध और ही तबीयत का जीव है। उसी ने तो जोर दे देकर यह नौकरी करने को कहा है। हिन्दी में उसने एम० ए० किया है। कोई और तो नौकरी मिल नहीं सकती। एक यही नौकरी थी और अवध का बार-बार कहना, "हाथ की मेहनत की कदर सिर्फ यही देश जानता है। आशा, इसी से इतनी तरक्की की है इसने। यहाँ तो लखपति का लड़का अखबार बाँटता है और बड़े-बड़े लोगों के बच्चे होटलों में वेटर का काम करते हैं। तो हम में ही क्या लाल लगे हुए हैं जो झूठी मान्यताओं को पकड़े बैठे हैं।'

अवध से वह डरती है। कहती कुछ नहीं कभी। उसे हस्पताल में क्या-क्या हीन काम करने होते हैं और वह अपने आप को महतरानी जैसा महसूस करने लगती है यह भी उससे बताया नहीं जाता। जिसे खुद नहीं दीखता उसे दिखाना क्या।

हस्पताल की सीढ़ियाँ चढ़ते उसे याद आ रहा है कि जब अवध से उसकी सगाई हुई थी और उसकी सहेलियों को मालूम हुआ था कि वह अमरीका जाएगी तो उसे अपने घेरे से बाहर किसी अच्छी, किसी बड़ी दुनिया का जीव मानने लगी थीं। उनकी ईर्ष्या में आदर भी था और उनके भीतर विस्मय कि आशा में ही ऐसा क्या है जो उसे अवसर मिला है। अवध कहा करता है कि अवसर के सिर्फ एक लट होती है, बाकी सिर गंजा। जब सामने आए पकड़ लेना चाहिए, अन्यथा पकड़ में नहीं आ सकता।

शायद वह ठीक कहता है। जब डबलरोटी खाते-खाते उसका जी तंग आ जाता है तो उसको गरम-गरम मकई की रोटी याद आती है और सरसों का साग जिसमें ताजे बिलोए मक्खन की बड़ी-सी सफेद-सफेद डली डुबकियाँ लगाती है। यह सोचकर तो उसका दिल ही बैठ जाता है कि अवध ने अभी पढ़ाई शुरू ही की है और पीएच० डी० करते उसे चार साल लग जाएँगे। सड़क पर मिलने जुलने वालों से तो वह कतराती है कि कहीं कोई उसकी नौकरी के

विपय म न जान जाए।

लच टाइम म श्राशा जल्न जल्दा हस्पताल वा मान्यिां उतर कोने के ड्रग स्टोर का तरफ जा रही है। उस याद नही रहा था कि यहा वतन हर दो सप्ताह म मिलता है। उसके वतन का पहला-पहला चव आया है। वह हिसाव लगाती जा रहा है कि छाटी ननद की गुडिया लनी है बडा ननद का स्वटर। दानो चव से मगा रहा है। रती न बटरी से चलने वाला छोटा टप रिकाडर मगाया है और गुडडो न बहुत लिखा है जोजी रैवलोन का निपस्टिक भज दा।

उसकी चाल म इस समय एक अजीब तत्परता है। वह एकदम भूल गइ है कि उसन अपन यूनीफाम व नइ से न्विन वाल रवर व जूत पहन हैं और यह कि घुटने स टखने तक उधनी उसका टागा भी अव तीन दिन पुराना हो गई है। उन पर छोट छाट नए वाल उग आए हैं। उस यह भी याद नही है कि वह अभी नस भा नही है सिफ नस सहायिका है जिस अपन यहाँ दाइ कहत हैं।

एक और नील की नागिन

आज यह उसकी आखिरी क्लास है। इसके बाद सिर्फ वार्षिक परीक्षा और परिणाम। उसका परिणाम लगभग तैयार है। क्लास की परीक्षा के स्थान पर उसने एक लम्बा पेपर लिखकर लाने को दिया था। थोड़े-से पेपर जाँचने और बाकी हैं। घर जाने से पहले वह यह भी कर लेगी। आज ही ग्रेड शीट रजिस्ट्रार के ऑफिस में दे आएगी। अब यहाँ आने का मन नहीं करेगा। बहुत प्यार हो गया है उस पिछले एक साल में इस इमारत से जो पहले किसी रईस का महल था और अब स्थानीय कालेज है। इमारत के पिछवाड़े सीढ़ियाँ चूमती छोटी-सी झील है और झील में कालेज के बोटिंग क्लब का बड़ा-सा याच।

वह अपने डेस्क पर अक्सर चाय के ठण्डे होते प्याले को रखे झील की हर लहर को गिनने का यत्न करती है और दूसरे किनारे पर के घने जंगल के रहस्य को सुलझाने की भी कोशिश अक्सर उसने की है। सबसे अधिक रिश्ता उसका झील के जल से रहा है, मुझे पुराना रिश्ता। कभी खुश हुई है तो झील ने उसे गुनगुनाते सुना है। उदास रही है तब भी उसकी तकलीफ को सुकून पानी से ही मिला है। शाश्वत चिर स्थिर बेलाग, निर्लेप, आकाश का आईना झील का जल!

क्लास लेने का मन नहीं। उसके छात्र हैं प्रतीक्षा करते होंगे। औरों से आखिरी दिन भले ही छात्र क्लास बढ़वा लें पर उसकी क्लास में वे अवश्य आते हैं। आरम्भ में उसे इन्हीं छात्रों से भय लगा था।

ग्लास दिन ल्या मुना रहा बेल्न तलवार हुए हत्या कर नावाने गन म । ंग बात का नाम हो गया—सब से अब तक एक सस्त्र मूत्र म यह सब । ड्रामा म और व उमग सब है । नहीं पात्र व थान वह कभी न्य द्वार नहीं खोलता ।

और फिर सात दिन म ता व लोग पलगिसवनिया जा रहे हैं । विनाश का यह मौका नहीं मिली है । स्वयं उमन अभी नया सुख भाजन का यत्न भी नहा किया है । जब वहाँ पहुँचेगा सब देखा जाएगा । अभी भी नुमा म प्रविष्ट उसका पुरान का मोह मन रहा है । गाल मांस न था है । आँखो कापियाँ खोल दी हैं । पद्म लट आए पपर ममड लिए हैं । पाठ पढ़ाना नहीं होगा । शेक्सपियर का बकस मेज पर बिना खास रखा है । कनय म एक प्रश्न पूछने के लिए हाथ उठा लिया है आपका विचार म क्लियोपेट्रा वेश्या थी या रानी

तुमने ता यह विषय पेपर के लिए चुना था तुम ही बताओ न कि तमने क्या निष्कर्ष निकाला है ?

मैं समझता हूँ यह रानी से ज्यादा प्रिय थी । मैंने प्लूटार्क से भी उसका जीवन पढ़ा है । उससे भी यही सिद्ध होता है ।

क्यों ?

इसलिए उसके जितने प्रेमी थे—पोम्पे जूलियस सीज़र एन्थनी ।'

'पहले यह बताओ कि तुम क्लियोपेट्रा जो ऐतिहासिक पात्र है उसकी बात कर रहे हो या कि शेक्सपियर की क्लियोपेट्रा की ?

दोनों ही की । मुझे तो उनमें अन्तर नहीं दिखाई देता ।

कनय सबसे मुँहजोर सबसे जिद्दी लड़का है क्लास में उसे अपनी ही आवाज से लगाव है । खूब बोलता है । उसे बुरा नहीं लगता । अक्सर जब किसी आकस्मिक प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे पाता तो कनय ही चाहे गलत ही सही हाथ खड़ा कर उत्तर देने को उत्सुक रहता है ।

उन दो क्लियोपेट्राओं की साथ साथ बात तो तभी हो सकती है जब

नम उनका तुलना करें। तुम्हारा विषय होना चाहिए था शेक्सपियर की क्लियोपेट्रा रानी या वेश्या ? साहित्य के काम म सिफ साहित्यिक पात्रों की आलोचना ही होनी चाहिए। वस मा ता हर साहित्यिक पात्र अपन म पूरा है, एक इकाई है चाहे वह किसी अन्य यथाय पात्र का छाया या नकल या पोर्ट्रेट क्या न हो। हम यहाँ देखना है कि शेक्सपियर न अपनी क्लियोपेट्रा को रानी बनाया है या वेश्या ?"

मुझे ता शेक्सपियर की क्लियोपेट्रा भी वेश्या ही लगी। देखिए, शेक्सपियर न भी ता दिखाया है कि वह अपनी सखी स कहती है कि एन्थोनी खुश हो तो कहना मैं बीमार हूँ और उदास हो ता कहना मैं नाच रही हूँ यह तो धूतता भरी बात हुई ।

विनय बोलता जा रहा है। एक एक कर क्लियोपेट्रा के अवगुण उसके फरेब, मक्कारी चरित्रहीनता गिनवाता जा रहा है। उसन कलाम की ओर देखा। अट्ठारह उन्नीस बास वप के लडके-लडकियाँ हैं। सिर झुकाए मुन रह हैं। कुछ लडकियाँ जरा जरा शरमा लती हैं। कुछ लडके किसी किसी पक्ती पर मुस्करा देते हैं। सबका बी०ए० का पहला साल है। सब अभी नया-नया ही है।

विनय क्लियोपेट्रा की सात पुश्त की खबर ल रहा है। वह मन ही मन मुस्करा रही है। साहित्य म रहा ता अच्छा आलोचक बन जाएगा—दृष्टि चाह पनी हो न हो पर सफलता के लिए और प्रसिद्धि के लिए अपन प्रति यह जरूर हो अपन मन म अडिग विश्वास और विश्वास में अभिमान हो।

हस कर बोला, अरे यहाँ बेचारी क्लियोपेट्रा के पक्ष म कोई नहीं बोलेगा क्या ? यह विनय का मत बिना चलेंज के नहीं जाना चाहिए ।"

कलाम चुप है। खुली खिडकियों से अत मई का गुनगुना हवा एक चक्कर लगा लौट गई है। सोरियस होकर बोला इतना समय अब नहीं है कि हम विस्तृत विवेचन म जाएँ। हाँ मन जो इस बार क्लियोपेट्रा

न्म उनकी तुलना करें। तुम्हारा विषय होना चाहिए था शेक्सपियर का क्लियोपेट्रा रानी या वेश्या ? साहित्य के क्षेत्र में सिर्फ साहित्यिक पात्रों की आलोचना ही होनी चाहिए। वैसे भी तो हर साहित्यिक पात्र अपने में पूरा है, एक इकाई है, चाहे वह किसी अन्य यथार्थ पात्र की छाया या नकल या पोर्टरेट क्यों न हो। हमें यहाँ देखना है कि शेक्सपियर ने अपनी क्लियोपेट्रा को रानी बनाया है या वेश्या ? '

'मुझे तो शेक्सपियर की क्लियोपेट्रा भी वेश्या ही लगी। देखिए, शेक्सपियर ने भी तो दिखाया है कि वह अपनी सखी से कहती है कि एनथोनी खुश हो तो कहना मैं बीमार हूँ और उदास हो तो कहना मैं नाच रही हूँ यह तो धूर्तता भरी बात हुई ।' '

वनेय बोलता जा रहा है। एक एक कर क्लियोपेट्रा के अवगुण उसके फरेब मक्कारी चरित्रहीनता गिनवाता जा रहा है। उसने क्लास की ओर देखा। अट्ठारह, उन्नीस, बीस वर्ष के लडके-लडकियाँ हैं। सिर झुकाए मौन रह हैं। कुछ लडकियाँ जरा जरा शरमा रही हैं। कुछ लडके किसी किसी युवती पर मुस्करा रहे हैं। सबका बी०ए० का पहला साल है। सब अभी नया नया ही है।

वनेय क्लियोपेट्रा का सात पुश्त की खबर ले रहा है। वह मन ही मन मुस्करा रही है। साहित्य में रहा तो अच्छा आलोचक बन जाएगा—दृष्टि चाहे पैनी हो न हो पर सफलता के लिए, और प्रसिद्धि के लिए, अपने प्रति आग्रह जरूर हो, अपने मन में अमिट विश्वास और विश्वास में अभिमान हो।

इस बार बोला, अरे यहाँ बेचारी क्लियोपेट्रा के पक्ष में कोई कुछ बोलेगा क्या ? यह वनेय का मत बिना चैलेंज के नहीं जाना चाहिए ।''

क्लास चुप है। सुना लिडकियों से अन्त मई की गुनगुनी हवा एक चक्कर लगा लौट गई है। सीरियस होकर बोला, ' इतना समय अब नहीं है कि हम लम्बे विवेचन में जाएँ। हाँ मन जो इस बार क्लियोपेट्रा

फिर से पढा कई वर्ष बाद तो मुझे लगा कि नाटककार 'वह अच्छी है या बुरी है' जैसी छोटी बात पर मत व्यक्त न कर एक अनूठे पात्र को जन्म दे रहा है या शब्दो म एक अद्वितीय चरित्र का फलक पर रख रहा है। यह भी लगा कि ज्यो वह कह रहा हो कि उसने क्या-क्या किया इससे सरोकार नही, पर सरोकार इससे है कि वह यह सब इस सफलता स कर सकी यानी इतने महान सम्राट विजेता जो उसके प्रेमी रहे वे अवश्य ही केवल उसके प्रेम की कला मे निपुण होन के कारण मात्र स उसके नहा हुए। अवश्य प्रेम कला म निपुण अन्य महिलाए उस समय बहुत-सी थी और इन महापुरुषो को उनकी कमी नही थी।

नाटककार इगित करता लगता है हो सकता है कि वह हर प्रमी स वास्तव म हा प्रेम करती थी कि उसका महानता इसी म था कि वह एक को नहीं सभी प्रेमियो को आत्मदान शरीरदान के साथ-साथ कर सकी। अन्यथा शरीर मात्र स कोई क्या किसी को बाँध सकता है। और यदि आभिजय के अधिकारी राजा या रानी मान लिए जाएँ तो वह अवश्य ही अपनी उदारता म पूरी रानी थी विरल थी ।

लकचर समाप्त हुआ। साथियो स भी विदा हो गई है। कार उठा वह घर की तरफ चल दी है। एक एक कर कितन मील के पत्थर गुजर गए हैं। जहाँ फिर लौटना नही होगा न यही देखने को कि कितनी काई उन पर जम गई है।

न्यूयाक म आखिरी शाम है। सामान पिछल दिन ही जा चुका है। सिफ दो सूटकस कार और विनोद रह गए हैं। शाम को खाना सक्सेना साहब के यहाँ है। कई लोग और आए हैं खान पर। एक कोलम्बस स भा युगल आया हुआ है श्री और श्रीमती भारद्वाज। मान हा सक्सना न बताया यह अनिल भारद्वाज पेनसिलवेनिया म ही रहता था स्टट कालज मे, जहाँ विनोद और वह जा रह हैं।

औपचारिकता का जगह नहीं रहा। अनिल पुरवा है और विनोद

[कु]छ जानता नहीं, इसी से पेनसिलवेनिया कैसा है, कालेज कैसा है [ड]ाउनटाउन कैसी है, मकानों की दिक्कत है या नहीं, आबोहवा इत्यादि सबकी पूरी खबर मिल रही है। इधर श्रीमती भारद्वाज ऊपर तक खाने से प्लेट भर कर सीधी हुई तो उसे आकर पकड़ लिया है उन्होंने।

'तो आप जा रही हैं स्टेट कालेज ?''

'जी ! आप हँस रही हैं ? कोई विशेष बात है क्या ?

नहीं, नहीं। मुझे हँसी यूँ आ रही है कि आपको भी जाने ही स्टेट कालेज की हसीना से साबिका पड़ेगा।'

जा ?'

'अरे अनिल तुम बताओ न इन्हें तुम तो उसे मुझ से ज्यादा जानते हो'' उन्होंने पति को बाँह से पकड़ कर बुलाया।

'ओ छोड़ो मीनू, किस का जिक्र छेड़ा है बनावटी अनिच्छा से बोले वह।

अरे बताओ भी, तुम्हारे साथ तो वह बंगलौर से है। तुम भी खूब फिदा थे कभी उस पर।''

यह तुम्हारी गलतफहमी कभी नहीं जाती। औरत हो न आखिर। अरे, मैं तो उसे पहले दिन ही पहचान गया था। इसी से कभी लिफ्ट नहीं दी। नहीं तो उसका क्या, उसके तो सब पहले भाई साहब पीछे माई डियर ।

सक्सेना साहब भी आ गए इस तरफ ज्यों गुड़ की सुगन्ध पर मक्खी।

'क्या मलिक की बात करते हो ?''

और किस की बात करें भई ? स्टेट कालेज के साथ तो उसका नाम सीमेंट से जुड़ गया है। यह तुम्हारी मीना भाभी कह रही है कि जैन साहब को और मिसेज जैन को उसके बारे में बताओ।''

'कोई होगी भी जिसकी बात तुम लोग किए जा रहे हो ?''

बिनाप न पूछा।

' जान जाप्रोग भाई जान जाग्रोग। वहा तो जा रह हो। जान हा एक आध न्नि म उसस मुलाकात होगी। तुम नए-नए होग वहा, ता वही तुम्ह बुलाएगी खाने पर रेस्तरा म कभी चाय पर ले जाएगा ।'

''तो अच्छी हा तो बात है , वह बोला।

आप नही समझता आप ना होगा घर पर जब वह इस आपके साहब को मिलगी बहलाएगी दुलराएगा ।

छोडिए भी मै नहा मानती। कुछ और बात कीजिए।

नही मानती ? माना देवी फुफकारी।

आप उस जानत। जा नही। वह रेखु पूरा प्हुचा है। जानना हा जहा यह काम करत थ बगलौर की तब म वहाँ वह अकेला लडका लडका क हास्टल म रहता था। एक किसी का साथ रख रखा था। कहती थी मेरा भाइ है। पीछ लडका ने खोद कर निकाला उसका नाम गुप्ता था। गुप्ता मलिक भाइ बहन ' वह गया तो उसक अमराका स हर सप्ताह ट्रक काल आत थ, गिफ्ट पार्सल आते थ। तब तक तो उसका एक और भाइ निकल आया। कहती था यह आर्मी म था अब तक। फिर यहाँ आई तो गुप्ता का खुन्टा कर ग। अफवाह हुई उसका मगतर आ रहा है कोई। वह आया। काद भाटिया था। उसके लिए गहना कपडा लाया जूतिया तक लाया। महाना भर एक हा अपाटमन्ट म रह फिर उसका भी पता नहा चला एसा भा कोई हिन्दुस्तानी लडका देखा है जिसकी जात न धम ? और गजब यह कि चहरे स एसा भोला है हमनी एसा माठा मन म चाहें भाभी मा' भाभी जी करक डालना है कि क्या काइ मकान करगा। नहा मानना ता दम लना जाकर। अभा चिटठी आइ है परसा मरी एक सहेली का। लिखा है वह रमिया म दा हिन्दुस्तानी लडका क साथ अपाटमट शयर कर रही है क्योकि उसको लम्ब सडा न मकान बच दिया और

उस वही कमरा नहीं मिल रहा । ग्रजा उसका कुछ ठाक
शादीशुदा को छोडती ह न क्वारा को सबका उल्लू बनाती
ये उल्लू बनते क्या हैं कोइ दुधमुँहे तो नहीं हैं ?'
पूछा उसने ।

लम्बी साँस छोड वाली मोनू भारद्वाज ' यहा ता सम
आता । सब जानत है और फिर भी आँखो देखत जहर पीन
यह कि सबको उससे इश्क हो जाना है ।' सीधी नजर स
का देख लिया है जा खाने म व्यस्त है ।

तभ भ्र 'इश्क' कमर म भरी सिगरेट के धुएँ का परत
कर टग गया है एक भद्दी गाली का तरह जो देर तक हव
रहता है और अक्सर याद आ जाती है मौके बमौके ।

आज फिर जब बच्चा के सामने सह झगड कर गया है। मिम का जा है कि एक भारी पत्थर उसकी जाती कार पर दे मारे। बच्चे सब साध बने अपन अपन कमरा म दुबके है। मिम वठा है। न्यूयार्क स्टेट म तलाक इतनी कठिनाई स मिलता है अन्यथा जल्दी ही उसका पीछा छूट गया होता। तलाक जब तक मिलता नही वह यूँ ही आकर हर शनिवार बच्चा को मिलन के बहाने उसे सालता रहगा। पुरुष का आहत दप है। वह कसे सह लगा पत्नी को बच्चा का अधिकार मिलना और कानूनन प्रतिमाह तीन सौ डालर बच्चो के खच के निमित्त मिम को देना। शाम को खाना नही बनाया। बच्चो का दूध देकर मिम न गिलास म थोडा जिन अपन लिए टाली। टेलीविजन खोलते उसने दाँत पीस।

'डर्टी रट!'' मिम का आश्चय है, कभी इस व्यक्ति स उसने शादी भस की था।

दस बजे पेरीमसन देख कर वह उठी कि फोन बजन लगा। साचा उठाए, शायद जक हा। फिर अनमनी-सी उधर बढ गई।

'हैलो!

'मिम!

'रूपा!

'हाँ अकेला हा? कुछ देर बात कर सकती हूँ क्या? उधर आवाज टूट गई।

'क्या ? क्या हुआ है तुझे ?'

कुछ नहीं ।

तू रो रही है क्या ? लगा कि रुलाई रो रही है जैसे कोई मर गया हो।

क्या ! क्या मुँह से बोल क्या रो रही है ? किसी ने कुछ कह दिया तुझे ?'

मिस जानती है रुपा भावुक संवेदित है। बात बिना बात मन मानित महसूस करने लगती है। और सच हो मिस के आगे अपने मन का गुबार निकालती है पर ऐसे रोती कभी नहीं।

मा मिस लोग इतने गन्दे हैं मिस इतने मन्दे नीच, कपटी मिस ।

तुझे किसी ने कुछ कह दिया क्या ?"

नहीं

"तो फिर ?

वह फिर सुबक-सुबक कर रो दी।

एक हाल कपटी। मिस मैं मर जाना चाहती हूँ। मुझे जीना नहीं है। बस मन यहाँ रहना नहीं ।

घर जाना है ?

हाँ, मिस मुझे घर जाना है। मुझे मरना है। तेरे पास नींद की गोलियाँ नहीं है क्या ?

यकायक लटकी। क्या तू इस समय यहाँ आ सकता है ?

'आकर क्या होगा ? चार दिन ले गई है ।

देख, मै उधर नहीं आ सकती। बच्चे सोए हुए है और मैं सु क्लान्त हूँ, पर तू पहले रोना बन्द कर फिर बता क्या हुआ है ?

हुआ कुछ नहीं।

नहीं बताना चाहती तो चल अच्छा है। अब तू टब में गरम पानी भर कर आधा घंटा नहा ले। फिर चाय पीकर सो जा।

सुबह इतना क्लेश नहीं रहेगा ।

उधर रोना दुगना हो गया मिस खिन्न हो गई ।

'अब न तू बताएगी, न चुप होगी ?

"मिस मैं जाना नहीं चाहती । मिस लोग कितने ।

नीच हैं कपटी हैं । घर तो नई बात है क्या ? और तेरे मरने से क्या सब सुधर जाएगा ? मैं बताऊं तू गधी है । तू सोचती है सबने तेरा उधार खाया है कि तू भली है तो सब भले क्यों नहीं हैं ? मेरा सुन न सब भले हैं न होंगे । और तुझे मरना नहीं है । कोई एक लात मारे तू दो लात मार मरती क्या है ? किन से तेरा झगड़ा हुआ है ?

'नहीं तो ।

तो फिर ?"

किसी से नहीं

'तू रोना क्या बन्द नहीं करती है ? देख तू इधर बहुत पढ़ रही थी । शायद तू जरूरत से ज्यादा काम करती रही है और अगर तेरा मन ठीक नहीं तो तू किसी की सहायता ले । मैं तो तेरी सहायता कर नहीं सकती ।

मिस पर मैं किससे कहूं । तू कहती है चुप हो जा । मेरे बस का तो नहीं न । मेरे अन्दर इस समय गांठें ही गांठें पड़ गई हैं और दम घुट रहा है ।

'वहां तो गर्म पानी से नहा ले, लम्बी सांस ले । खुली हवा में कोई किताब पढ़ना शुरू कर दे । जानती हूं कहना आसान है करना कठिन, पर निदान क्या है ? सुबह तू किसी डाक्टर से मिल ।

'डाक्टर से ?'

हां तेरा मन अस्वस्थ है । तुम्हें सहायता चाहिए जिससे जा दे सके । मैं यह दे नहीं सकती उसके लिए तुम्हें किसी दिमागी डाक्टर के पास जाना होगा ।

पर डाक्टर क्या करेगा ?

'करगा क्या ? शरीर बीमार हो दवा ल्या। मन बामार हो तो क्या उपाय करगा। दस में एक बडे ग्र ढ मनश्चिकित्सक को जानता हूँ ।

'नहा, नहीं मैं ठाक हूँ मिस। मुझ कुछ नहा हुआ है। सब इतन घिनौन हैं कि जीने का साहस नहीं रहा। इतना गल्गो कैसे लेना जाएगी मिस ?'

'अच्छा अब तू जाकर नहा ग्रोर सो जा। सुबह मैं ग्राऊगा।

ग्यारह बजे मिस न फोन किया।

'क्या कर रही थी ?'

बठी थी यहीं।

नहाई नहीं ? खाई नहीं ?

'कसे सोना होगा ? मुझ से हिला नहा जाता तुमन इतना रात क्या तकलीफ की ?

कहती है क्या तकलीफ का ? ग्ररे मुझ का फोन करत हिचक नहीं हुई ग्रोर ग्रब मुझ पर इतनी बात लाद दा। कि ात किया लेकिन कभी जरा नहीं माना ? देख जिसे कष्ट दन है उसका बात मानन है। ग्रन्यथा तुझे काई ग्रधिकार नहा था कि मुझ दुविधा म डाल। मिस बहुत गुस्सा हो ग्राई थी।

''ग्रब सन सुबह मैं नहा ग्रा सकती। मुझ बहुत काम है ग्रोर मैं तेरी सहायता भा नहीं कर सकती। मैंने ग्रपन डाक्टर का फोन किया था। यह उसका नम्बर है एच० ग्रार० ५ ५५२२। डा० ग्राट। सुबह तू उससे समय ल ले ।

पर मिस म डाक्टर का कहूँगा क्या ?

यह मैं नहीं जानती। म इतना जानती हूँ कि तू दुखी है ग्रोर तुझे डाक्टर का सहायता चाहिए। ग्रब तू वायदा कर कि एक बार उसके पास जाएगी

मन्त्रा नना हागा ?

होगा तो तन शरीर कोई मूल्य नहीं रखता ? वैसे यह डाक्टर ज्यादा महँगा नहीं है। विशेषकर विद्यार्थियों के लिए है यूनिवर्सिटी की ओर से। बहुत भला आदमी है।

"मैं वायदा नहीं करती। अभी इतना रो लेने पर मन कुछ ठीक है। शायद सुबह सब ठीक हो जाए।'

'नहीं तो समय ले लेगी ?

हाँ, नहीं तो डा० ग्राट से समय ले लूँगी।

अच्छा अब सो जा।

मिस गुप्रिया ।

'सो तू बचा के रख कहीं और काम आएगा।

रूपा नहाई। रूपा ने चाय पी। रूपा ने सुनहरे प्रवाल के दस ग्राम पत्र पलटे और अकेले कमरे में भरी रात में रूपा छटपटा कर रोई। गिरीश का फोटो खोज कर निकाल बेतहाशा वह हँसता चेहरा चूमा और फिर जोर से दीवार में माथा फोड़ लिया।

हाल ही में नई बनी दुमंजिली इमारत की सीढ़ियाँ चढ़ती रूपा का मन हुआ कि अब भी लौट जाए। साइकोनालिजिकल सर्विस की तख्ती के पास आ वह क्षण भर खड़ी रही। घड़ी साढ़े नौ बजा रही थी। साढ़े नौ बजे डाक्टर से उसका अप्वाइंटमेंट था, आफिस दो कदम भर और था।

कहिए ? सुनहरी बालों वाली सेक्रेटरी ने हरे शेड से रंगी पलकें उठाई।

मेरा अप्वाइंटमेंट है डाक्टर ग्राट से।'

'श्रीमती मिश्र ?'

'जी।

बैठिए, डा० ग्राट अभी आते हैं।

अधिक बैठना नहीं पड़ा। दो-एक मिनट में कोई और का दरवाजा खोलकर डाक्टर ने उसे भीतर आने का संकेत किया।

कम आयु का डाक्टर। नहीं उसका असिस्टेन्ट होगा। पर डाक्टर ही था। कमरे में सुबह की धूप थी। खिड़की के नीचे पार्किंग लान में कारें कतार की कतार भरी थी।

"मैं रूपा हूँ डा० ग्रान्ट। मिस मरियम ओब्रायन ने मुझसे वायदा करवाया था कि मैं आपसे सहायता लूँ।"

हाँ, मरियम का कल रात फोन आया था कि आप व्यथित हैं पर आप क्या स्वेच्छा से नहीं आईं ?"

"जी, यह बात नहीं। मैं पहले कभी किसी मनश्चिकित्सक के पास गई नहीं और मुझे भय था कि मैं कुछ कह नहीं पाऊँगी ?"

'देखिए मानसिक चिकित्सा एक विशेष प्रकार की चिकित्सा है। इसके लिए आप किसी प्रकार बाध्य नहीं हैं। बस सहयोग आवश्यक है पर जो आप नहीं कहना चाहें वह न कहने को आप स्वतन्त्र हैं।

लगा कि टूट कर जिस आशा में वह यहाँ तक चली आई थी वह भी सम्भव नहीं होगी। रुंधे गले से बोली 'मिस का कहना है कि मुझे सहायता की आवश्यकता है।

आपका अपना भी यही मत है कि आपको आवश्यकता है ?

'दो बड़ी-बड़ी डबडबाई काली आँखें डाक्टर के चेहरे पर जम गई। धूप की तार में चमचमाता आँसू पहले एकाएक उभरा फिर धार बनकर।

"अच्छा आपकी आयु कितनी है ?

"छब्बीस वर्ष।

विवाहित हैं ?

'जी।

कितने वर्ष से ?

पाँच वर्ष।

नहीं, वह रिवर साइड मे है। मुझे वकल फलाशिप मिल गया। क साल से यहा हू। वह रिवर साइड म पढात है।"

बच्चे ?'

'जा एक बवी है तीन साल की। वह दादी के पास है दश म। त भर की था तभी हम यहाँ आ गए थे।'

"पति से आपके सम्बन्ध कसे हैं ?

जी ?

' मुखद ?

' मुखद ? वह नही सक्ती, मैं शायद उनके याग्य नही हूँ।'

यह तो काइ बात नही हुई।'

वह मुझ से घणा करते हैं।"

'कल आप इसी कारण दुखा थी ?'

जी नही उनका इससे कुछ सम्बन्ध नही है। उनका घणा की ा मैं आदी हूँ ।

तब ?'

'न्ा बट र ?

अच्छा आप पन्ती है ?"

जी साशल वक म एम० ए० कर रहा हूँ।

आपका विद्यार्थी जीवन सन्तुष्ट है ?"

था। डाक्टर पिछले कई महीना स हम फाल्ड वक के लिए जाना पड़ा है। उस क्षेत्र मे मेरी एक व्यक्ति से भेंट हुई। जब मेरा उस व्यक्ति से परिचय नही था तब मैंने सुना था कि वह बहुद लम्पट है। पर मैंने जब उन्हे जाना तब बेहद सहृदय व भद्र पाया। यहाँ तक कि मेरा दिन उनके नाम से निकलता और रात भा उन्हीं के नाम स होती।

'ऐसा क्यों ?'

मैं उनके विषय मे दिन रात सोचने लगी। वह सदा इतने नम्र रहे और मेरा इतना खयाल रखते रहे कि साथ ही वह

मायावी भी है।'

'अच्छा वह व्यक्ति कितनी आयु के होंगे?'

'लगभग पचास। शायद अधिक या कम भी हो ठीक से नहीं कह सकता।'

'विवाहित हैं?'

'जी, उनके तीन बच्चे हैं।'

''आपका उनसे मिलना कहाँ होता रहा?''

'काम के सिलसिले में उनके आफिस में ही।'

'और मित्रता बढ़ी?'

'जी।'

'कितनी?'

'जितनी मित्रता बढ़ सकती है।'

'क्या आपका उनसे सम्बन्ध हुआ?''

'पिछले सप्ताह मैं उनसे मिली।'

'उसके बाद?'

'नहीं।'

'सुझाव उनकी ओर से था?'

'मेरी ओर से नहीं था यह कहना तो गलत होगा। जो मैंने कहीं पर दिया था शायद उसी को उन्होंने शब्द दे दिए। ऐसा मान लीजिए।'

'और यह सम्बन्ध पूरक रहा?'

'अब तक पुरुष से अनभिज्ञ था।'

'फिर?'

डाक्टर बोस ने [illegible] की चार छुट्टियाँ दीं। इस बीच उनसे बात नहीं हुई न टेलीफोन हुआ। पर मैं उसी सब विषय में सोचती रही। छुट्टियों के बाद काम से आफिस गई। पता चला कि बाहर गए हैं। यकायक लगा जैसा। [illegible] फोन करेंगे, पर सूना बना रहा।

मैंन फान किया। बडे ठण्डे मे बात। वन ग्राफिस गड डाक्टर उनकी आंखो म पहचान तक नही था। मैंन सोचा, मुझे धोखा हुमा। नाम का नाइब्रेरी से लौट रही थी तो मेरे देखत उनकी कार म एक ग्रन्य महिला बठी। सुबह उम ग्राफिम के बाहर भी देखा था। डाक्टर, मुझे लगा कि मेरे जिस्म म कीचड मली है ग्रौर दुगन्ध उठ रही है। मैं नहीं जानती कैसे घर पहुँची। पर मुझे दुख हुमा कि मैं जीवित पहुँच गई हूँ। मैंने एक तरह मरने की साची फिर मिम से बात हुई।'

"ग्रच्छा यह बताइये कि क्या ग्राप उनसे विवाह की ग्राशा रखती थी ?'

"विवाह ? नही ता। वह विवाहित हैं ग्रौर मैं भी।"

'तो ? केवल सम्बन्ध जारी रखना चाहती थी ?'

"वह नही तो कम से कम पहचान तो चाहती थी। यह नही चाहती थी कि एक दिन म ग्रजनबी हो जाऊँ।'

पर यह ग्राप जानती थी कि यह सम्बन्ध स्थायी नहीं होगा ?

'नी।"

'फिर इतना विद्रूप क्यो ?"

' डाक्टर, एक विशेष समाज म पली उसके सस्कारो स जकडी मान्यताम्रो को निभाती एक स्त्री जब उन सब मान्यताम्रो के विरुद्ध इतना बडा या इतना हय कदम उठाता है ग्रौर फिर जान जाती है कि यह जो किया वह सब किसी इतनी छोटी, इतनी गन्दी, इतनी कुरूप वस्तु के लिए किया, तो मन म घिन ही घिन भर जाती है। यह गन्दगी सनी मी जो लगती है—इसके साथ कैसे जीना होगा। माफ कीजिए मैं रोना नहा चाहती पर मेरा वम नही है। कल सोचा कि मन रोना चुक गया है पर ग्रभी।

ग्राप जितना चाहिए रो लीजिए। उसम क्षमा नही माँगिए यह एक घण्टा ग्रापका है। ग्रच्छा ग्रापने कहा कि पति ग्रापसे घृणा करते हैं ?"

मेधावी भी हैं।"

अच्छा यह व्यक्ति कितना आयु के होंगे ?

लगभग पचास। शायद अधिक या कम भी हो, ठीक से नहीं कह सकता।"

विवाहित है ?"

हां उनके तीन बच्चे हैं।'

आपका उनसे मिलना कहाँ होता रहा ?"

काम के सिलसिले में उनके आफिस में ही।"

और मित्रता बनी ?'

जी।

कितनी ?

जितनी मित्रता बन सकती है।

यानी आपका उनसे सम्बन्ध हुआ ?'

पिछले सप्ताह मैं उनसे मिली।

इसके बाद ?

नहीं।'

सुझाव उनकी ओर से था ?'

मेरी ओर से नहीं था यह कहना तो गलत होगा। जो मेरे चेहरे पर लिखा था शायद उसी को उन्होंने शब्द दे दिए। ऐसा मान लीजिए।'

और यह सम्बन्ध पूरक रहा ?"

अब तक पूरक से अनभिज्ञ थी।

फिर ?

शनिवार बीच में ईस्टर की चार छुट्टियाँ पड़ी। इस बीच उनसे बात नहीं हुई न टेलीफोन हो। पर मैं उसी सबके विषय में सोचती रही। छुट्टियों के बाद काम से आफिस गई। लगा कि बदले से हैं। यकीन नहीं हुआ। उम्मीद थी फोन करेंगे वहाँ चुप्पी बना रहा।

मैंने फान किया। बडे ठण्ड म वाते। कल आफिस गइ डाक्टर उनकी आँखा म पहचान तक नहा थी। मैंने सोचा, मुझे धाखा हुआ। शाम का लाइब्रेरा से लौट रही थी तो मेरे देखत उनकी कार म एक अन्य महिला बठी। सुबह उसे आफिस के बाहर भी देखा था। डाक्टर, मुझ लगा कि मर जिस्म म कीचड सनी है और दुर्गन्ध उठ रही है। मैं नही जानती कसे घर पहुँचा। पर मुझे दुख हुआ कि मैं जीवित पहुँच गई हूँ। मैंने कइ तरह मरने की सोची फिर मिस म बात हुइ।

अच्छा यह बताइय कि क्या आप उनसे विवाह की आशा रखती थी?

'विवाह ? नही ता। वह विवाहित हैं और मैं भी।"

'तो ? केवल सम्बन्ध जारी रखना चाहती थी ?"

वह नही तो कम से कम पहचान ना चाहती थी। यह नही चाहती थी कि एक दिन म अजनबी हो जाऊँ।

"पर यह आप जानती थी कि यह सम्बन्ध स्थायी नही होगा ?'

'हा।'

'फिर इतना विद्रूप क्यों ?"

डाक्टर, एक विशेष समाज म पली उसके सस्कारा स जकडी मान्यताओं का निभाती एक स्त्री जब उन सब मान्यताओं क विरुद्ध इतना बडा या इतना हेय कदम उठाती है और फिर जान जाती है कि यह जो किया वह सब किसी इतनी छोटी इतनी गन्दा इतनी कुरूप वस्तु के लिए किया, तो मन म घिन ही घिन भर जाती है। यह गन्दगी सनी सी जो लगती है—इसके साथ बस जाना होगा। माफ कीजिए मैं रोना नहा चाहती पर मेरा बस नहा है। कल सोचा था कि सब रोना चुक गया है पर अभी।"

आप जितना चाहिए, रो लीजिए। उसम क्षमा नही मागिए। यह एक घण्टा आपका है। अच्छा आपने कहा कि पति आपसे घृणा करते हैं ?"

जो उन्हें जब से मालूम हुआ कि विवाह से पहले मैं किसी अन्य से विवाह करना चाहता था उन्होंने मुझे क्षमा नहीं किया।'

वह घृणा कैसे प्रकट होती है?'

सुबह से शाम तक की दिनचर्या में हर छोटे मोटे कार्यकलाप में। जिसमें मेरी रुचि हो वही नहीं करने देना। यह जानते हुए भी कि बच्चे से मुझे अलग करना पाप होगा उन्होंने उसे अपनी माँ के पास छोड़ दिया। साल भर मैं बहुत रोई अपना बच्चा के लिए। फिर यह फेलोशिप मिल गया तो यहाँ आ गई। नहीं तो जान जाती भी कि नहीं। डाक्टर मुझे अपने से नफरत हो गई है। बच्चा मेरी मुझे भूल गई ऐसा खत में लिखा रहता है। पति के पास छुट्टियों में जाती हूँ तो ताने देते हैं। वह नाराज हैं मेरे यहाँ आने से। और अब यह गिरावट और वह भी अकारण।

देखिए आप अपने को व्यर्थ सालिए नहीं। पाँच साल के वैवाहिक जीवन में यह पहला अवसर था कि आपने बाहर सम्बन्ध स्थापित किए?

जी सिर्फ विवाह से पहले गिरीश से प्रेम था पर सम्बन्ध नहीं वह शादी नहीं हो सकी। जब यहाँ इस व्यक्ति से मिलना हुआ तो लगा दूसरा जन्म हुआ पर वह तो छलना थी।

'श्रीमती सिंग व्यक्ति साधारणतः वही खोजता है जिसका अभाव हो। आपका सीधा-सा केस है। आप जो इतनी दुःखी हैं तो जैसा आपने कहा अपने संस्कारों की वजह से। अन्यथा मुझे तो आश्चर्य है कि इतने साल आपने ऐसा जीवन बिताया और सन्तुष्टि की खोज नहीं की।'

मैंने आशा की थी कि आप मुझे डाँटेंगे। आप तो मेरी गलती को गलती तक नहीं कह रहे।

नहीं डाँटने का प्रश्न ही नहीं। प्रश्न यहाँ यह नहीं कि व्यक्ति को क्या करना चाहिए क्या नहीं। प्रश्न यहाँ यह है कि व्यक्ति जो

करता है, वह क्या करना है ? आपने जो बताया, उसके अनुसार आपकी किसी में रुचि थी। वह स्वप्न बीच में भंग हो गया। विवाहित जीवन में असन्तुष्टि रही। मानसिक कलह भी। आप एक व्यक्ति से मिलीं जो लगा इस अभाव को दूर कर देगा। "आप आकृष्ट हुई, उस व्यक्ति में आपको तृप्ति मिलती थी। उसे आपने पुनर्जन्म कहा। वह आपके विवाह से पहले की स्थिति में लौट जाना हुआ।'

डाक्टर अपने को मैं शायद समझती हूँ, पर यह जो हो रहा है इसे नहीं समझती।

इस भी देखिए। आप उससे प्रेम करने लगीं ? पर वह विवाहित है और शायद उस व्यक्ति का छोटे-मोटे अस्थायी सम्बन्ध स्थापित करने की आदत है। स्थायी सम्बन्ध के लिए न उसकी आयु है, न स्थिति, न शायद भावनाओं के लायक मन स्थिति। वह उन लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने का आदी है जो ऐसे सम्बन्धों के माने हैं। अब आप भिन्न थीं, आपने अस्थायी से अधिक चाहा। शायद वह व्यक्ति समझ गया कि आपको उससे वास्तव में प्रेम है और वह डर गया।'

डर ? वह ऐसे नहीं कि किसी से डरें।'

'आमतौर पर एक पुरुष जो भयभीत है वह मन सुदृढ़ होने का भान देता है। यह जरूरी नहीं कि वह आपको पहले से कम पसन्द करने लगा हो पर वह अवश्य आपसे दूरी चाहता है अपनी सुरक्षा के हेतु क्योंकि शायद उसकी इसमें कोई भावना मिश्रित नहीं है। यदि है तो वह उसे स्वीकारने की स्थिति में नहीं। अब रहा आपकी मृत्यु कामना का प्रश्न सो मेरी राय में आप इस व्यक्ति के सम्पर्क में बिल्कुल न आएँ। क्या ऐसा सम्भव है ?"

'सम्पर्क यथासम्भव कम हो सकता है, टलना अभी सम्भव नहीं। दो एक महीने अभी काम बाकी है।'

'ठीक है। दूसरी बात आप इस समय बहुत टेन्स हैं वक्ष में या पेट में दर्द महसूस होता है ?'

जी, भातर सब ऐंठता है।'

आप खुल कर साँस लीजिए और अपन को व्यस्त रखिए। जब तक आप ठीक समझें कार भी न चलाइय।

वह कैसे होगा डाक्टर, कार नहीं चलाना अपने से भागना होगा। मैं अभी अपन से भागा तो जीवन क्या जीने लायक रहेगा।'

बाहर धूप पर बादल आ गए थे। ओस भीगी सी रुपा उठा।

'अगले सप्ताह आप इसी समय आइय। तब भविष्य के लिए कुछ सुझाव खोजेंगे ताकि आपकी जो असली बीमारी है एकाकीपन उसे दूर किया जा सके और अगर इससे पहले आप जरूरत समझें तो फोन कर लीजिएगा।

एक सप्ताह में पतझड़ आ गई है। पत्ते जो लाल सुनहरे हो पेड़ों से वक्षों पर अटके थे एकाएक झड़ गए हैं। शामें नंगी हैं भिन मातमी। कमरे में आज धूप नहीं। डाक्टर की गहरी आत्मीय आँखों में चमक है पहचान है मोहा है चिन्ता है।

आज रात की तैयारी में पहले ही से हमारे हाथ में है?

नहीं डाक्टर आज रोऊँगा नहीं। अभी उस दिन का सन्नाटा बना है। बना के नजर में भर मुँह की हँसी ।

आपका भेजा हुआ गुलाब मिला। इसलिए अभी भी मिला है। शुक्रिया।

मैंने तो बहुत देर रुक कर भेजा था और भेजने के बाद भी पछताता रहा था।

क्यों?

बात यह है कि मुझसे पुरुष डर जाते हैं। पूना में मरीज भी था?

आपका उस व्यक्ति से फिर सामना हुआ? एक मौन सा दादा कमरे में उतर आई।

जी, बात नहीं हुई। मैं आपकी बातों पर सोचता रहा। डाक्टर

अभी भी कभी-कभी दम घुटने लगता है और शरीर घिन से भर जाता है और मरने की तबीयत होती है। डाक्टर ऐसा छोटा काम मैंने कैसे किया ?

"देखिए श्रीमती सिंह, आपकी बातों से यह अनुमान लगाया है कि आपका अपने विषय में कुछ निर्धारित मत है कि आप ऐसी हैं और आपको यह तकलीफ इसलिए नहीं है कि आप उस व्यक्ति से प्रेम करती हैं बल्कि इसलिए है कि आप अपमानित महसूस करती हैं। और जो घटना आपके लिए इतना महत्त्व रखती है वह उस व्यक्ति के लिए तो आए दिन की बात है। अच्छा यह बताइए आपने अपने भावी जीवन के लिए क्या सोचा ? आप क्या पति से तलाक चाहती हैं ?

नहीं, नहीं तो।"

'तो इस स्थिति में जिसमें पति आपसे प्रेम नहीं करते आप रहना चाहती हैं ?'

'डाक्टर विवाह हमारे लिए एक ही ओर को जाने वाला रास्ता है। और फिर तलाक जो सुख की उम्मीद में लिया तो कौन जाने वह सुख हाथ आएगा भी कि नहीं ? डाक्टर जीवन तो ऐसे ही चलाना होगा।

"खैर, यह आपका निश्चय है पर ऐसे जीवन में जो स्नेह का अभाव है वह आप फिर नहीं खोजेंगी। यह स्वाभाविक बात है और फिर स्थिति ऐसी ही हो सकती है। या तो आपको यह स्वीकारना होगा या फिर भ्रष्ट के जीवन का छोड़ सही रूप से सुख खोजना होगा। अभी आप बंधन में हैं। या तो बंधन के जीवन को सुधार सम्भालिए या छोड़ दीजिए। देखता हूँ कि छोड़ना आप नहीं चाहती और सुधारना आपके पति के ही हाथ में है। ऐसे में बाहर से अभाव पूरा होना ।'

'नहीं। डाक्टर नहीं। यह जो एक बार हुआ क्या कम हुआ। अब फिर ऐसा नहीं होगा। दोबारा कभी नहीं ।

त

घनिाण ठीक है । इस बीच कुछ और ?"

विशप कुछ नही । सिर्फ कार चलाते समय मैं पोग ब्न्न।
सती हूँ । उससे ध्यान बट जाता है और तब नही चलाती और इस
आपके विषय म बहुत बार सोचा मैंने । सोचती हूँ आपका समपता
की शादी न हो आऊ या लगता है पतनी रस्सी पर चल रही
हूँ कदम-कदम पर सन्तुलन रखती ।

प्राय रोगी अपने मानसिक चिकित्सक के प्रति स्नेहशान हो जाते
हैं । यह भी स्वाभाविक है । मै समझता हूँ आप स्वस्थ है और सस्कार
चाहिए या आपकी सुबुद्धि यह चिकित्सा आपको लाभ नही देगी । इस
स्थिति म अगले सप्ताह के लिए अप्वाइटमेट नही लीजिएगा । भविष्य
म कभी भी आपको लगे कि मै सहायक हो सकता हूँ तो आप फोन कर
लीजिए डाक्टर के नाते या मित्र के ।

जी धन्यवाद ।

कार तक पहुँचते रूपा के सीने म फिर गाँठें उग गई है । समझ म
पस पर स्टीयरिंग से टकरा कर आसू टपकने जा रहे हैं । मन्नतन
बिगड गया है । वह गिरी जा रही है नीचे गहर म । अखबार ने
चाह पगार न्नए हैं ।

कुतिया का पिल्ला

न्यूयार्क में उस दिन बहुत बर्फ पड़ी थी। सारे रास्ते बर्फ की मोटी तह से ढक गए थे। सर्दी इतनी थी कि हाथ पैर सब सुन्न हुए जा रहे थे। दोपहर को सूर्य निकल आया। धूप में बर्फ की सफेदी से आँखें चौंधिया रही थीं।

सड़क के किनारे किनारे कदम रखती सात साल की जेनी पाटरसन अपने लाल ऊनी कोट की जेबों में बाहें भरे और सिर को पर के सफेद हुड से अच्छी तरह ढके बर्फ पर चल रही थी। उसके जूतों से बर्फ में नई-नई इंच गहरे निशान उभर आते, पर जेनी के पैरों को ठण्ड नहीं लग रही थी। उसने 'स्नो बूट' पहने थे जिनके भीतर फलालैन का अस्तर लगा था।

जेनी बड़ी प्रसन्न थी। उसकी ममी ने आफिस जाते समय उसे चाकलेट के लिए दस सेण्ट दिए थे। चौराहे के ड्रग स्टोर से चाकलेट लेकर जेनी चूसती हुई उसका आनन्द ले रही थी और धीरे धीरे इधर उधर देखती जा रही थी।

सूर्य जैसे अकस्मात उदय हुआ था वैसे ही क्षण भर में लुप्त भी हो गया। बर्फीली हवा बर्फ के हल्के कण मुँह पर फेंकती चलने लगी। जेनी ने अपने कोट का ऊपरी बटन बन्द कर लिया और तनिक तेज़ी से चलने लगी। हवा भी तेज़ हो चली। देखते ही देखते धुंध इतनी हो गई कि आगे का देख पाना भी सम्भव न रहा।

जेनी की घबराहट बढ़ने लगी। न्यूयार्क वह नई-नई आई थी।

रास्ते ठीक से पहचान नहीं सकती था। धुध के कारण सब घर एक से दिखने लगे थे। जनी ने पैर आगे रखा और दूर तक रपटती चली गई। उस जगह जम जाने के कारण बर्फ बहुत फिसलनी हो गई थी। जनी से स्वयं उठा भी नहीं गया। घबराहट में वह बड़ी मुंह छुपा कर रोने को हुई कि सामने से भागकर आते एक लड़के ने बाँह पकड़ कर उसे उठा लिया। वह नीग्रो लड़का पीटर था। आयु यही कोई आठ वर्ष लेकिन पीले डौल में वह जनी से काफी बड़ा लगता था। जनी डर कर सहम गई। पीटर का आबनूस-सा काला चेहरा और उसमें चमकते सफेद दाँत जैसे काले जूते पर बर्फ के कण। पीटर का ध्यान उधर नहीं था। वह बहुत प्यार से जनी का मुँह देख रहा था और उसके कपड़े भी झाड़ता जाता था। जनी चुप हो गई तो बोला '''तूफान आ रहा है। तुम्हें कहाँ जाना है चलो पहुँचा दूँ।'

नहीं मुझे अब घर का रास्ता पता है। जनी ने अपने घर की

नहा !''

'क्या ?''

'कहा न, नहीं !' पीटर चिड़चिड़ा कर बोला । जेनी न भी आग्रह नहीं किया ।

अच्छा, कल यहीं मिलना । तुम्हारे लिए केक लाऊँगी । मेरा वध है है । मिलोग न ?

'अच्छा !'

पीटर साइकिल पर और जेना पदल ही अपनी राह पर चल दिया ।

रात का खाना मेज पर लगाती मेरी बोली, पीटर मार्था कह रहा थी तुम किसी गोरी लड़की से बात कर रहे थे ?''

''हाँ माँ, वह जेना है । वह अच्छी लड़की है ।''

अच्छी है ? कम करो ! इन बदमिजाज गोरो से मिलना नहीं करना चाहिए जो यह समझते है कि यीशु ने सिर्फ उन्हें ही बनाया है । जानते नहीं, हम वे हृय समझते हैं और जाने का अधिकार भी नहीं देना चाहते ।''

मेरी बड़बड़ाती रही । पीटर बड़ा अनिच्छा से सूप में चम्मच घुमाता रहा ।

माँ से पहले गुड नाइट कहने बारबरा कमरे में आई तो जेनी बोली, 'मम्मी आज, मैंने एक नया मित्र बनाया है ।''

अच्छा ! कहाँ रहता है ? कौन है ?''

उसका नाम पीटर है । वह ड्रग स्टोर के पीछे वाले मकानों में रहता है ।''

'ड्रग स्टोर के पीछे तो नीग्रो बस्ती है । वह क्या काला है ?

हाँ, है तो मम्मी पर है बहुत अच्छा ।

चुप रहो । इन जाहिल गँवारो से दोस्ती करने को मैंने तुम्हें मनाही की थी कि नहीं ? दफ्तर से तुम्हारे पापा सुनेंगे तो बहुत

विगडैत।

नक्नि मम्मा पाटर बहुत न्यारा है। वह बिल्कुल बुरा नहीं ।

चुपचाप सा जामा। वह न्या उसस दास्ती नहा रखनी।'

बारबरा चला गई पर जेनी स उस रात साध्य प्रायना ठाक स नहीं हो पाई। कल उसका जन्मदिन है और वह पीटर स वह आइ है कि वह उस मिलन आए।

पीटर दा घण्ट स, लाल कागज म लिपटा और सफ़ रिबन म बधा चाकलट का पकट लिए खडा है। थक जाता है तो बच पर बठ जाता है। थोडा दर म उठ कर फिर टहलन लगता है। शाम का हल्का धुधलका हो चला पर जेना नही आई। पीटर काफी उदास हो गया है।

लकिन तभी जनी तेजा स भागता हुई आई। लस का बहत सुदर फ्राक पहने थी वह। हाथ म कागज के लिफाफ म दो केक के टुकड लिए थी।

ओह पीटर! बडी देर हो गई। ममा आने हा नहीं दता था।

'फिर?"

वह विक्चर गई है। लो तुम्हारे लिए केक।

'मरे हा जन्म दिन मुबारक। लो, तुम्हार लिए।

'धन्यवाद।'

जेनी चाकलट का डिब्बा खोलने लगी। पाटर बठा केक खात रहा। जनी खुशी स उछल पडी।

'ओह पीटर तुम बहुत अच्छ हो। इतने सारे चाकलट। और जनी ने बराबर म खडे हुए पीटर के गाल पर स्नह भरा चुम्बन अकित कर दिया।

'मारा! पकडो!! बदमाश!!! भागन नहा पाए।'

पीटर और जनी हतप्रभ स दखते हा रह गए। पाटर पर डल,

पत्थरों, थप्पड़ों, मुक्कों की वर्षा होने लगी।

"इतनी हिम्मत! गोरी लड़की को हाथ लगाता है!! सपोला कहीं का। बचे नहीं मारो।

उन्मत्त गोरों की भीड़ आठ-वर्षीय नीग्रो बालक। काले चेहरे से टपकता लाल खून सफेद बर्फ में बड़े सुन्दर चित्र बना रहा था। बिजली का खंभ पकड़े पीटर वहीं ढेर हो गया।

'पीटर! पीटर!! उसे मत मारो।'

जेना को घसीट कर कुछ लोग ले गए। वह चीखती रह गई।

'वह मेरा मित्र है। बहुत अच्छा है! मत मारो उसे।'

सड़क के उस पार एक धमार गोरी बुढ़िया ने चमचमाती शेवरलेट रोक कर भीड़ की ओर इशारा कर एक राहगीर से पूछा, 'क्या भई वहाँ क्या हुआ? एक्सीडेंट?"

बिना यह देखे कि पूछने वाला स्त्री है और स्त्रियों के आगे गाली नहीं देते, वह मोटा-सा, बदसूरत दाँतों वाला अमरीकी उत्तेजना से भरा बोला, 'एक कुतिया का पिल्ला (नीग्रो) एक गोरी लड़की से बलात्कार की चेष्टा में था।"

"गुड गॉड!"

कार तेजी से स्टार्ट हो कर सिसकती हुई हवा हो गई। ○ ○

एक नगर

पूरे एक रुपए का टिप बैरे के लिए छोड़ वह बाहर निकली। लगूना आज देख लिया उसने भी। मानसरोवर का नया संस्करण, घर बहुत उजाड़ घुटा घुटा और सकरी। जब से नई दिल्ली आई है कितनों ने उससे पूछा कि वह लगूना में कभी चाय पीने गई कि नहीं? और उसके नकारात्मक उत्तर पर उसे दया भरी दृष्टि से देखा। इसीलिए आज यहाँ आई क्योंकि तीस रुपए जहाँ खाने के लगें ज़रूर वहाँ खासियत होगी ही। आज अकेले उसने वहाँ कॉफी पी ली है। वेतन मिला था। पर्स में दस दस के नोट चुभने रहे थे। शाम भर मन भरमाता रहा था कि कुछ आज किया जाए, खर्च किया जाए।

इण्डियन एयर लाइन्स के आफिस के बाहर बस भर विदेशी उतरे। कुछ देर वह टिटक कर देखती रही। एक थुलथुल अमरीकी महिला की खाल शीशे की माला बिजली में झलमल करती, नीले टूरिस्ट बैग, कलम्दार हल्के सूटकेस, कैमरे, दूरबीन थामे चेहरे। लन्दन, पश्चिम जर्मनी, यूरोप अमरीका, नई दुनिया। वहाँ शायद मांस खून कर खाना हो। पुटता नहीं हो वहाँ शायद लोग जीते हों वहाँ शायद जिन्दगी बीमार न हो।

धीरे धीरे चली। अन्नपूर्णा पीछे रह गया। जनपथ के खोखे ना। इन्हीं तरह के खोखों में दिन रात सामान का व्यापार। दिल्ली का हर परिचय सड़कों के गिरजे मन्दिर गुरुद्वारे यहाँ खोखे। यहाँ सब मिलता है। नकली जेवर। नकली बात। चेहरे के लिए रंग रोगन।

शाशी फेंच सण्ट की दी हैं, पर उससे लगाए नहीं जाते। झिझक होती है। जब नई-नई आई थी तब उसे इला अजीबोगरीब लगती थी। आफिस से आकर इला नहाती है नहा कर बिना कपड़े पहने बाथरूम से चली आती है।

शृंगार मेज पर घण्टा बैठी रहती है। क्रीम वगैरह लगाती है। मोटे होठ तीखे लाल रंगती है। भौं और पलकों को नील काजल से तराशती है। बगल में सीने पर सण्ट रगड़ती है। फिर सिल्क की साड़ी पहनती है गहरे रंग की और पेटीकोट मलमल का कि साड़ी शरीर पर रहते हैं। इला उसपर हरदम बिगड़ा करती थी। "आ लड़की यह सूरत हा सूरत है लगा कि इसका कुछ बने-बनाएगा भी? यह भला चेहरा। इस शहर में इसका क्या होगा? आ तुझे कुछ मेकअप सिखाऊं।"

न बाबा। मैं ऐसे ही भली।

पर इला मज मज भूल भी गई होगी कि क्षण भर पहले यह क्या कह रही थी।

यह गाविन्द का बच्चा पूरा गधा है। इला कहा करे। सभी का एक ही मज। कभी-कभी जा म आता है विडमन की तरह बन्दूक लेकर आठ दस लड़का का ठिकाने लगा दूं।

हा बार बार मा हल्का-सा हाल मड़क पर बजता है इला पग भुलाना अप्पी के गाल पर चिकोटी काटता मल्लाप के बाल सहलाती चली जाती है।

अप्पा यह इला ऐसी क्या है?

क्या है?

नहीं कुछ नहीं, मैंने यूं ही पूछ लिया था।

तू उसे नहीं जानता ताया। इला बड़ी है। प्यारी है। फिर उसका जवान करारी है। मैं और मैं एक ही कालेज म पढ़ता था। मैं ता उसे बरसा से जानता हूं। बुरा यह हुआ कि एक मास्टर जा म

इसका लव हो गया। पर वह था बारह वर्जिया। इससे शादी का चायन्स कर कैलीफोर्निया भाग गया। इसने बहुत खत लिखे पर एक का भी जवाब नहीं।

पीछे उसने एक सरदारजी से शादी कर ली वहीं पर। और इसे तीसरा महीना था। कहती थी मर जाऊंगी। हमने बहुत समझाया। रफा-दफा किया एक डाक्टरनी को डेढ सौ रुपये देकर। पर तभी से इस इला को कुछ हो गया है ।"

यह जिसके साथ जाती है उससे ब्याह क्यों नहीं कर लेती है ?"

ब्याह ? सोपो यह दिल्ली है यहां कोई किसी से शादी-वादी नहीं करता। जानती है इला ऐंग्लो इण्डियन है ? और ऐंग्लो इण्डियन लड़की से कोई एंग्लो इण्डियन शादी करे तो करे बाकी हिन्दू, सिख तो सब कायर हैं, एक दम नीच। समझते हैं कि लड़की के बाल कटे हैं स्कर्ट पहनती है तो जरूर ही उसका "मारल स्टण्डड" भी स्कर्ट के जितना ही छोटा है।'

इला को सब तंग करते हैं। आफिस का हर छोकरा बास, मिस टामस शाम को मेरे साथ चाय पीजिएगा, डिनर लीजिएगा ? ' दस रुपये चाय पर उड़ा दिए किसी की कार मांग लाए वायदे पर कि उसकी भी इला से मुलाकात करवा देंगे, और घर लौटते समय बेचारी को उल्टा सीधा पटाते हैं पीछे अपनी हिन्दू बीवियों के पास लौट जाते हैं सीधे सादे बनकर।"

तू बच्ची है। दो साल रह इस कमरे में तो तू जानेगी दीवारें क्या होती हैं ।

अप्पी और ही लड़की है। सबसे हंसती बोलती है। पास नहीं फटकने देती। किसी मेजर से सगाई हुई है। हर पन्द्रह दिन में वह देहरादून से आता है। तब अप्पी रात को लौटती नहीं। हैण्डबैग में एक साड़ी रख कर ले जाती है।

आज सुबह ठुड्डी के पास पड़े नील पर ढेर-सी क्रीम का मालिश

करते इला उसके पास आई थी।

क्या तोपी ? मैं तो सोचती थी तू बड़ी साधी है।

क्या हुआ मेरे साधेपन को इला ?'

यही तो पूछती हूँ। यह निक्की के साथ क्या है तेरा ?

'निक्की ?'

अरे वही मानकचन्द खन्ना मिस्टर निक्की। तेरा बास। सुना है, तू पिक्चर देखने गई था उसके साथ '

तुझे किसने कहा ?

उससे तुझे क्या ' गई था तो गई थी। पर यह बता कि निक्की का छोड़ तुझे कोई और नहीं रहा ? देख तोपी, तू बड़ी अच्छी लड़की है, आर तू बहुत उदास रहता है। अकेली रहता है। तेरी ओर लोग ज्यादा ध्यान नहा दते। कोई तेरे से बात नहीं करता। निक्की बहुत भना है। फैशन वाला आदमी है रोबदाब है। सब दाइम म तुझ से मोठा बात करने लगा है ।''

इला ?

बुरा लगता है मेरा कहना ? मुझे परवाह नहीं। मुझ परवाह तेरा है। जानती है कि वह शादीशुदा है। उसका एक स्वीट हार्ट भी है। वह भी शादीशुदा है। जब वह नहीं आ पाता तब वह आफिस का छोकरियों मे दश बघारता है। असभी असल म शादीशुदा आदमी शादीशुदा औरतें हा पसन्द करते हैं। तेर जैसा सीधा भला लड़का उन्हें बोर कर देती है। जब कि तू दिल तोड़ कर बठ जाएगा उसके लिए। रागिनी। मेरा मान झटपट ब्याह कर ले उस कवि महाराज से जो अपना अर्थी तेरे डिपार्टमेंट म आया है। मैंने तेरे पीछे जान और दूर-दूर से ताकते देखा है। होने तो कवि शायद सब पगल हैं। तू क्या कम है ? नहीं तो आज निक्की कल कोई और पटाएगा। यहाँ सब यार हैं तोपी शादू ठग काम कर जो शादीशुदा हैं। वे एक ही बात जानते हैं सुना।

ग्रान्थिम से जब वह बाहर निकली थी तब उसने एक बड़ी सी ...ली कार स्टार्ट होती देखी थी, मिस्टर खन्ना की कार। बगल में ...चा जूडा बनाए कोई बैठी थी। निक्का ने सोफी की ओर देखा तक ...हा।

उस दिन सिनेमा हाल के अंधेरे में उसने सोफी की उंगलियां होंठों पर रखे रखी थी। एक हाथ से वह उसे धीरे धीरे सहलाता रहा था। 'एकदम नूतन का चेहरा है सन्तोष तुम्हारा' सोफी के कान में उसने कहा था।

भाग तकिए में भीगा चेहरा रगड़ते हुए वह सिसकी। घर की याद उभर आई। बिमा, कीट्टू अब स्कूल से लौट कर पूछते हैं "मम्मी, बुआ कहाँ गई है?"

भाभी चाख कर कहती है, "मर गई है।"

कोयला भई न राख

जैसे ही वह बाहर आई उस पर निगाह पड़ गई। गिलास के रंग-सा चटख लाल उसकी पंखुड़ियाँ नाखून-सी तराशी, दो परत खुल चुकी थीं और बीच का हिस्सा, मन्दिर के कलश-सा भरपूर और बुर्जिया सा नुकीला, अभी बन्द था सौरभ समेटे। गीली घास में उसने घुटने टेक, काँटों से बाँह बचाते उसकी ओर हाथ बढ़ाकर उसे अपने हाथों से मटा लिया। कहाँ था यह अभी तक? पहले दिखाई क्यों नहीं दिया? इतने दिन इसकी कली, रहस्य की तरह पत्तों में ही पनपती रही क्या?

भीतर लाकर चाकू से उसने उसकी लम्बी डण्डी के सिरे को कलम की तरह तिरछा काटा और पानी के गिलास में रख दिया। इसे वह टेड को देगा। टेड का कमरा गरम है। कमरे की खिड़की दक्षिण की ओर खुलती है जिसके बाहर धूप दिन भर छनती है। गरम कमरे में गुलाब कुछ ही घंटों में पूरा खिल जाएगा भीतर की खुशबू बिखेरते हुए और एकदम उस कमल-सा दिखाई देगा जिसे उसने साल पहले उथले मैले पानी के तालाब में देखा था।

ड्रेसिंग टेबल के बड़े आईने के सामने वह ज्यों-ज्यों अपने लम्बे घने बालों में कंघा घुमाती जा रही थी त्यों-त्यों बालों की लटें सिमट कर रेशम के लच्छे-सी मुलायम और चमकदार होती जाती थीं। टेड को देखे बहुत दिन हो गए हैं। पिछली दफा जब मिली थी तो टेड ने कहा था सच, अक्सर सुनता रहा हूँ कि पूर्व बहुत रहस्यमय है और

वहाँ के लोग बहुत गहरे। आज पहली बार उसका मतलब समझ आया है। क्या सच ही दूसरों का मन या मान रखने को लोग अपना मो मन छिन्न भिन्न कर देते हैं तोड़ देते हैं ?"

'वह तो कहानी थी टेड' हमने का सा उपक्रम करते हुए उसने कहा था।

मान लिया कि कहानी ही थी पर तुम्हारी कल्पना में ही नहीं किसी ने तो उसे जिया ।

रिश्ते अपने यहाँ टूट जाते हैं ऐसी आसानी से जैसे दो धागे का साथ। तोड़ ही देते हैं। या यों कहो कि अधिकांश लोगों के जीवन में इन धागे के और बहुत सारे रिश्तों का टूट जाना ही सबसे बड़ी घटना होती है। ऐसी घटना कि उसके बाद भी जिन्दगी गिर गुजरा करती है, जो नहीं जाना। मर छोड़ा। गाता पुराना गान हूँ। इन सब छोड़ में और बहुत सा कुछ था ।

यहा तो मैं पूछना चाह रहा था क्या वह सचमुच हो गया था ?

उठाए और हाथ म फूल लिए अब वह बाहर आई ता शुरू अप्रल का सोना मडक पर माना परत-सा लिपटा हुआ था जिस पर वृक्षा की छाया के मनमाने गोल्ने बना लिए थे। आकाश म कुछ हल्के बादल छिटपुट याद स घिरे हुए थे। वह कदम बहुत सकोच से उठा रही थी कि कोई घास म खिली जगली डेज़ी कुचल न जाए। कमिस्ट्री बिल्डिंग के पास पहुँची ही थी कि उसे रुक जाना पड़ा। बिल उसके सामने आकर खड़ा हो गया था।

क्या मन फिर कतरा रहा हो न ? बिल की आवाज म बहुत शिकायत थी।

नही तो मैंने तुम्हे जाते देखा ही नही ।'

'सा तो तुम्हारी पुराना आदत है। खुद यहा और मन समुद्र पार। घर की याद आ रही है फिर ?'

तुम्ह पता है न फिर पूछन क्या हो ?'

इसलिए कि मन मेरा जरा भी सुन लो तो यही घर हो जाए, और न यह उदासी हो रहे। सच मन्नू, तुम सुनती क्यो नही ?''

बिल।

'अच्छा भई जाने दो। नहा ता लगोगी अभी सस्कृति, सभ्यता इत्यादि का अन्तर ह वाली खोखली दलील दन। पर एक बात कहे देना हूँ मन्नू तुम अपने को कब तक धोखा दोगी। तुम्हारी दलीलें दूसरा का विश्वास भल दिला दें, तुम्हे तो छल नही पाती ? खर अब और कुछ नही कहूँगा। यह फूल मुरझाने लगा है।

हा, इस पानी के बाहर बहुत देर हो गई है।

बिल का लम्बे-लम्बे डग भर कमिस्ट्री बिल्डिंग म जाना वह देखती रही और फिर क्यारियो के पास बनी बेंच पर बठ गई। बिल नाराज होकर गया है। उसका मन उसे कचोट रहा था। बिल सदा उसके लिए कुछ-न-कुछ करता रहता है जो अन्य लोग यहाँ सभी किसी क लिए नहीं करत। बिल बहुत मेधावी है, आकर्षक ही नही वह अत्यधिक

लोकप्रिय भी है। फिर क्या वह बिल के आग्रह से तनिक भी पिघलता नहीं ?

क्या बिल का बहाना बनाकर टालता रहा है ? अपना मेहरा बनाना चाहती। क्या है आखिर ? स्वयं का क्या कांडों के भाज के लिए सुरक्षित रख छोड़ा है उसने ? और बिल को लेकर तो उसका रुम मेट सेना उस झगड़े पर अलग यूनिट में चला गई थी। उसने सेना का दूसरा छोड़ा से पहले ब्रिजेट से बहुत सुना था। गुस्सा मुझे इस-लिए आता है कि मैंने ही उन दोनों की मुलाकात करवाई थी। पर मैंने सोचा था स्वाफ में है मैं मक्खन भी चुपड़ता नहीं। बड़ा सादा है। मुझे क्या मालूम था ।'

पर सखी तू जानती है यह मर्द का कसूर नहीं ।

जानती हूँ इसका नहीं इसके कपड़ों का है। अरा यह स्कर्ट पहने से तो निरा इसको मार दमे तक नहीं।

तू क्या मन छोटा करती है सब ठीक हो जाएगा। फिर लड़कों की तुझे कौन सी कमी है।

'जो भी हो इतना मुझे मालूम है कि बिल कोई शाक भाजी पर जीने वाला नहीं। उसके साथ छः महीने मैंने गुजारे हैं और वह सर जरा भी मास मछली नहीं ।''

एक तेज सिहरन उसके शरीर में होकर गुजर गई। बेंच का पत्थर ठण्डा था और साड़ी की परत में से काफी दूर से महसूस हो रहा था। टखनों के आस पास उसकी साड़ी भी ठण्डी महसूस हो रही थी। गीली घास से साड़ी का किनारा भीग गया था। यहाँ पता नहीं सब चीजें ठण्डी क्या हुआ करती हैं। खासकर बारिश। दिल्ली में बारिश सदा सुहावनी हुआ करती थी।

उस शाम जब बारिश से वह और जिजी सिर से पैर तक भीग गए थे और हवा के थपेड़ों से बचने के लिए टपकते नीम के नीचे खड़े थे तब भी बारिश तनिक ठण्डी नहीं लगी थी। कितने साल हुए होंगे

उस शाम को ? वह शाम जब अचानक झटके से विनी न उसे अपन तरफ खींच उसके होठो पर कुछ खोजते से अपने होठ रख दिए थे।

"अरे हटो, क्या करते हो कोई देख लेता तो ?'

देखा करे।

स्वय उसने ही अपने रक्त म खौलत उस उबाल को अनसुना क बमा फिर कोई शाम नहीं आन दी थी। स्वय [उसन ही खौलत हो का जवाब देने को आतुर अपने होठो म दात गडाकर अपने को स द ली थी।

विना मैं अगले सप्ताह जा रही हूँ।'

पर सरू तू नहीं जा सकती।

दादा, तुम मान लो तो अच्छा ही है। मेरा प्लान २१ तारीख पक्का है।

सरू तुझे हुआ क्या है ? बताती क्या नही ? ऐसे चला जाए क्या जम कभी जाना पहचाना ही नहीं था मुझे एक दूसर को ?

मुझे अमरीका स डिग्री लेनी है, डाक्टरेट का।'

वह यहाँ नहीं मिलेगा क्या ?'

पर वहीं स लेना है न मुझे।

सरू, वहाँ बहुत सर्दी होती है। मुझे सर्दी अच्छी नहीं लगत सर्दियो म मेरे पैरो की उँगलिया सूज जाया करती हैं। और वहाँ बर्फ बहुत गिरती है। लोग भी सुना है रूखे होते हैं" जान कित विनय विना की आवाज म थी, कितनी दीनता।

'भागो विना। जानता हूँ यह सब, पर जाना तो है मुझे। क्या विचलित होते हो ?'

सरू मेरा क्या होगा सोचा है तूने ?

तुम अभी जरा मेरे मोह जाल म उलझे हो। देखना भ समय भी नहीं लगेगा।

सरू!'

पुरुष समय-समय पर मरे हैं, और कीड़ों ने उन्हें हजम किया है। पर कभी प्यार के लिए नहीं।"

"झूठी।"

पौने ग्यारह की क्लास खत्म होने का घण्टा कर्कश स्वर में बजने लगा है। आस पास की सभी बिल्डिंगों ने ढेरों लड़के लड़कियाँ उगल दिए हैं। किताबें सँभालती वह उठी और जल्दी-जल्दी अपने विभाग की ओर चली। विभाग की पहली मंजिल में मेल रूम है। आज शायद फिर पिता जी की चिट्ठी आई होगी कि डिग्री मिलते ही फौरन लौट आए और वहाँ नौकरी तलाश न करे। विभाग के अध्यक्ष का कहना है कि नौकरी अभी नहीं देखेगी तो फिर सब नियुक्तियाँ हो चुकेंगी। उसे जल्दी ही पाँच-सात जगह अप्लाई कर देना चाहिए।

वह किसकी सुने? क्या वह पिता जी की बात का उल्लंघन कर दे और यहीं कहीं काम ले ले दो चार साल के लिए। फिर किसी दो कमरे के अपार्टमेंट में अधकच्चा बेस्वाद खाना खा और टेप पर रिकार्ड की पुरानी गजलें सुनते सुनते समय निकाले। समय तो निकल जाएगा पर हर शाम का वह भयानक आधा घण्टा जब हर जरूरी काम से निपटा वह हार कर पलंग पर लेटता है और रात का हुआ करती है या सुबह का वह पहला पहर जब किसी रात मिल कर जाना उसके स्वप्न बन देता है और वह रोता रोती जाग पड़ता है

उस आतुर चेहरे पर एक क्षणिक आशा की झलक जान के लिए उसे उन सब गिद्धों और भेड़ियों को सहन करना पड़ेगा जो या तो इसलिए चले आएँगे कि वह अमीर बाप की इकलौती बेटी है या इसलिए कि वह अमरीका जाने में उनकी सहायक हो सकती है या इसलिए कि वे अपने दोस्तों से कह सकें "एक अमरीका से पी एच० डी० वाली लड़की का भी रिश्ता था पर यार शादी करें तो किसी लड़की से न कि डिक्शनरी से।"

उसका मेल बाक्स खाली था। शायद डाक ही अभी नहीं आई है या सेक्रेटरी ने बाँटी नहीं है। वह जाने को मुड़ी और अन्दर आने एक झुंड से समूह से घिर गए। जिस लड़के की लम्बी दाढ़ी था, उसका नाम उसे याद नहीं आ रहा था। वही बोला, 'अच्छा यह बताओ तुम्हारा पिता महाराजा है क्या?"

एसा सौभाग्य मेरा नहीं। तुम क्या पूछ रहे हो?'

इसलिए कि यह रोज रोज नई साड़ी, ये सब अवरान हमने कभी तुम्हें वही साड़ी दुबारा पहने नहीं देखा।'

'आज जानती हो, बिल्कुल बसन्त की प्रतिमूर्ति लग रही हो दूसरा बाला।

काश मैं वसन्त की सी मुदित मन भी होती वह मुस्कराई।

चलो यूनियन में चलते हैं काफी पियेंगे,' पहला बोला।

'खयाल अच्छा है,' वह सबाब से बोली पर मेरा डाक्टर बकर से ग्यारह बजे का अप्वाइंटमेंट है।

डा० थियोडोर बकर! वह पेयरी! पहले वाले ने कौतूहल से पूछा।

हाँ पर यह पेयरी क्या होता है?

वे ताना कस पड़े। दूसरे वाले ने पहले से कहा जरा झेंपते हुए 'बताओ भई तुम ही बताओ इसे। मुझ से नहीं होगा। क्या नादानी है।

यह 'फेयरी' क्या होता है ?"

'तुम्हें सच ही नहीं मालूम ? ' दादा वाले की मिट्टी के रंग-सी आँखों में अविश्वास भरा विस्मय था।

क्या होता है 'फेयरी' ?"

वे फिर हँसे। पहले वाले ने हल्के से आँख दबाई और हाथ हिलाते वे सब एक ओर को बढ़ गए। वह सन्न सी खड़ी उन्हें जाता देखता रहा। फिर किताबें उसने मेज पर रख दीं, और थक गए अपने हाथ से आँखों में उनकी घिनौनी आवाजों से पड़ी किरकिरी को उसने धीरे से मला। एक अजब भय और तीखे दर्द ने अपना दंश भर दिया था। उसका कलेजा मुट्ठी सा सिमट कर ऐंठ गया।

माथे पर छलक आए पसीने को पोंछने के लिए उसने पर्स में हाथ डाला। रूमाल खोजती उसकी उँगलियाँ पर्स में एक पुराने तह किए पत्र से छू गईं। पत्र उसकी एक सहेली का है। लम्बी चौड़ी गप्प के बीच उसने लिखा था, 'बधाई दी थी, तुम्हारा जो नन्हा मौसी था उनके यहाँ फिर दस साल नया मेहमान आने वाला है। पहला तो लड़का था न, मौसी खूब पोते की आस लगाए बैठी है।'

पर्स से हाथ निकाल वह जरा मेज से टिकी ज्यों सहारा ढूँढ रही हो। पहले मुस्कराई और फिर हँस दी एकाएक। नन्हा मौसी ने कभी कहा था 'तेरे पास क्या नहीं है सब—तू सुन्दर है पढ़ी लिखी है पैसा है। मेरा तो एक बेटा है और वह तेरे मोहजाल में ऐसा पड़ा है कि बावला हो गया है। तू यह मुझ से क्यों बदला ले रही है? मेरा भी नहीं है यह जानकर मैंने तुझे अपनी बेटी सा माना था—मगर तू ऐसा न कर कि मैं इस बुढ़ापे में अपने बेटे के घर का पानी तक न पा सकूँ।'

वह नन्दू के पास जरूर जाएगा। टैंड का कमरा गरम है। उसकी खिड़की के बाहर धूप दिनभर छनती है। कुछ ही घंटों में गुलाब पूरा खिल जाएगा और मन्दिर के कलश से इसके हृदय में उत्कट सौरभ

निखर जाएगा। तब यह ठीक ऐसा दिखेगा जैसे वर्षों पहले का वह कमल जिसे उसने उथले, मैले पानी के तालाब में देखा था।

आधे मुरझाए उस अधखिले फूल को कुछ क्षण वह खड़ी खड़ी बिना दमे देखती रही। फिर किताबें समेटने लगी। पुरुष समय-समय पर मरे हैं और महिलाएँ भी, कीड़ों ने उन्हें हजम किया है पर प्यार के लिए कभी नहीं। झूठी झूठी।

सरसी धरती

गुड इवनिंग लेडीज़ एण्ड जण्टलमन ! [वि आर अबाउट टु लैण्ड।'

नीचे झुककर उसने नीचे झाँका। वायुयान जिधर झुक जाता है उधर ही रोम की जगमगाहट बाहें पसार कर उड़ जाती है और फिर ज्यों उदास-सी हो ठहर जाती है, वायुयान दूसरी ओर को डोल जाता है।

एक लम्बी साँस ली उसने। गालों पर दुख रहे थे, कमर में भी दर्द सनसना रहा था। चेहरा सूखा और बाल बेजान हो गए थे। सात आठ घंटे का सफर उन्होंने डेढ़ दिन में तय किया है। दो बार वे कराची से चले थे दो बार लौटना पड़ा और उससे भी पहले बम्बई में ही छः घंटे देर से फ्लाईट चली थी।

कराची में वे सब थक गए थे। बच्चे चीख रहे थे महिलाएँ सन इधर उधर पसर गई थीं। आखिर एयरवेज की बस सबको होटल ले गई थी। होटल में चाय, खाना मिला। बिस्तर, कमरा भी स्वच्छ था पर उसे नींद नहीं आनी अनजानी जगह। वह खिड़की के पास कुर्सी डाल अंधकार में झींगुरों का शोर-हल्ला सुनती रही थी और वह हँस पड़ा था। झींगुर भी तो बँटवारे के साथ परदेस के हो गए होंगे।

उसने कहीं पढ़ा था कि दोपहर के सन्नाटे में जब सूरज सीधा सिर पर होता है रोम के भग्नावशेष तक लगता है अभी जी उठेंगे। अभी उनमें युद्ध और नर्तन गूँजने लगेगा। घोड़े और बग्घी ...

मगर आग आयेंगे। समय यहीं ठहर जाता है हर ईंट पत्थर और हर इश्तहार पत्थर हो जाती है । मैंने शीशे के दरवाजे में उसने चेहरा पढ़ा लिया। सारा शहर कोहरे में लपेट लिया गया था। लगभग सफ़ेद रंग का दिखना कि घट्टुआ का कुछ किनारा को छोड़ कर एक भी इमारत नजर नहीं पड़ती थी—बासन पाम्प गिरजे कुछ भी नहीं सिर्फ़ कोहरा।

लाउन्ज की एक कुर्सी पर धानी साड़ी वाली एक लड़की आँखें बन्द किए पड़ी थी। पास में उसका हैण्डबैग, मैगज़ीन, अखबार पड़े थे। शायद साड़ी की वजह या लड़की का रंग बेहद पीला बीमार सा लगता था। झुक कर उसका कंधा छू कर बोला, 'आपकी तबीयत तो ठीक है ?'

लड़की ने नहीं सुना। सुना तो और नहीं खोला। उसने से उसका माथा देखा, ठण्डा था।

'आपकी तबीयत खराब है क्या ?'

दो पांखों से रंगी पलकें बड़ी-बड़ी कजरारी आँखों पर से धीरे धीरे उठीं। हल्की झुंझलाहट मुँह पर फैली। जगाया जाना अच्छा नहीं लगा।

'चढ़ाई का समय हो गया क्या ?'

नहीं, मुझे लगा आपकी तबीयत ठीक नहीं, मैं यहाँ जगाने की नीयत मेरी नहीं थी ।"

एक उबासी रोकती वह बोली, 'अरे तबीयत तो बहुत खराब रही। मुझे तो लगा इस प्लेन में जाकर नहीं उतरूँगी। भीतर सब उलट गया इतना डर में। अगर अमरीका तक यही हाल रहा तो ईश्वर ही जाने ।'

'उम्मीद तो है कि मौसम सुधर जाएगा। और इतना ऊपर-नीचे जाना नहीं होगा। तुम कहाँ जा रही हो ?"

करीबनगड ।'

ग्ररे मच ? क्या पढन ?"

हा, वस्टन रिजव म फलोशिप मिली है, एम०ए० साशल वक के
ए।"

यह ग्रच्छा हुग्रा। मैं भा ता वहा जा रही हूँ। मरा मतलव
लीवलण्ड। वाकी जिनन लागा स वात हुई, सब कहीं-कहा जा रह है।
ोई पिटसबग कोई फिलडलफिया मुझे लगा क्लावलड म कोइ ग्रपन
श का मिलगा ही नही ।"

पर यह वात नहीं मैंन ता सुना है कि वहां ग्रच्छा खासी भीड है
स लागो की। ग्राप बठिए न। ग्राप भी वस्टन रिजव जा रही हैं
या ?

'नहा, मैं दो साल इन्टनशिप क लिए जा रहा हूँ क्लीवलड
लीनिक म। नक्श क ग्रनुसार वह तुम्हारे विश्वविद्यालय स ज्यादा
दूर नहीं है।"

म्राह ग्राप डाक्टर हैं।' उन बडी बडी ग्राँखा म विस्मयमिश्रित
ग्रादर भर गया। 'मैं डाक्टर लोगा का बडा मान करती हूँ।' वह हँसी
मानो ग्रपन ग्रविश्वास पर कि यह पतला-दुबला सावरी, बीमार दिखाई
देने वाली लडकी डाक्टरी करन जा रही है सो भी ग्रमरीका म।

जब तक जहाज चला दाना एक ही जगह बठी रही। दोनो दिल्ली
की थी।

मेरा नाम ग्राभा है ग्राभा मिश्रा। हम लाग ग्रीन पाक म रहते
हैं। मरे वडे भया का ठेके का काम है ग्राप ?"

हम लोग कराल वाग म रहत है।'

ग्रच्छा ? वहाँ ता मेरा वहुत-सा मटनियाँ रहता है। ग्राप किस
जगह रहती हैं करोल वाग म ?'

दशबधु गुप्ता रा पर वृद्ध गिरजे है। उनके चारा तरफ जा
वस्ती है वहा पर हमारा घर आ है ।

ग्रापन ग्रपना नाम नहा बताया ?"

नाजनीन टालेगी'
"मार्च में दाख़िल होगी?"
"जी हाँ।"

कनाडा में इस घटना पर काफी जश्न हुए। भाभी का मिलना एक 'ब्लैक फ़ॉरेस्ट' आई थी। वह उस बार में रख गई। नाजनीन को हस्पताल की तरफ से पूरे निर्देश लिफ़ाफ़े में मिल गए। वह बस में टर्मिनल तक गई। वहाँ से टैक्सी लेकर हास्पिटल।

नाजनीन उनमें से है जिन्हें दस बजे अन्य लोग विशेषकर न उत्सुक होते हैं न झेंपते हैं पर जिन्हें अन्य लोग सहजता से मित्र स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि यह कानों-कान सुनेगी अधिक, समय पर काम आएगी। वे यह भी जानते हैं कि इस सांवली त्वचा के नीचे बेहद नाज़ुक मन है। समय पर यह सलाह मशविरा भी दे सकेगी। नाजनीन भी यह जानती है। वह चुपचाप चाय का स्वागत करती है। जाते को मुस्करा कर विदा देती है। कभी बाँध कर किसी को रखने का उसका जी नहीं होता और अपना एकाकीपन वह रागियों के दुःख से, सुख से भर लेती है। अपना फालतू समय अन्य डाक्टरों की ड्यूटी पर जाना हो तो उनकी शिफ्ट निभा कर गुज़ार लेती है।

दिवाली पर सुना, कनाडा के भारतीय छात्र संघ की ओर से बड़ा आयोजन है। नाजनीन को फ़ोन आया कि शाम को वैराइटी एंटरटेनमेंट है, वह भी कुछ आइटम दे। नहीं, आइटम कुछ देने लायक योग्यता उसमें नहीं, पर वह गुलाबजामुन बना लाएगी।

चार पौंड सूखे दूध में नाजनीन ने थोड़ा मैदा मिलाया, थोड़ा बेकिंग पाउडर डाला और मक्खन पिघला कर डाला। थोड़े थोड़े ताज़े दूध के छींटे दे देकर चार लोई तैयार कीं और लोइयों की नन्ही-नन्ही गोलियाँ बाँधीं, गोलियों को गर्म घी में तला, गुलाबी हो जाने पर उबलती चाशनी में छोड़ दिया। चार सौ के करीब गुलाबजामुन बनाए दो दिन में। दिन भी क्या, रात में। सुबह, दोपहर, शाम ड्यूटी पर

गुजर जाते हैं। रात रह जाती है। अनुमानियम के आठ लिटर साइज वाले भगोने में भर कर वह टकसाल में रख गुलाबजामुन दिवाली पर कालेज लाई है। सबने बहुत पसन्द किए हैं। कम से कम वास महिलाओं को लिख कर उसने रेसिपी दी है। पर आभा से मिलना नहीं हुआ।

आभा ड्रेसिंग रूम में ही है इतनी देर। वह नागिन के गाने 'मन डोले मेरा तन डोले' पर नृत्य दे रही है। और आभा ने अपने वजयन्ती मालानुमा चेहरे को वास्तव में ही नागिन-सा बना लिया है हूबहू और उसके नृत्य ने आडियन्स को 'थ्रिल्स' कर लिया है स्टेज का। नटके सब तालियां पीटते थकते नहीं हैं। वस मोर वस मोर की आवाजें हवा में भर उठती हैं।

आभा से मिलना हुआ कुछ दिन बाद। नाजनीन कुछ डाक्टर मित्रों के साथ काफी पीने गई थी 'ड्रग स्टोर' में जो कि वस्टन रिजव के पास ही था। पांच क्लावलैंड में बड़ा हंगामा रहा। नीग्रो और गोरे लोगों में कलह-कलह लूट, हत्या छिड़ गई। कितने ही लोग मर मिटे। घर जला दिए गए, दुकानें लूट ली गई। हस्पताल में बहुत काम बढ़ गया। दो दिन कर्फ्यू रहा शहर में। कर्फ्यू हटा तो वह डरी-डरी सी जाने को हुई।

'आज अकेले अभी वहीं नहीं जाना' आप ने सावधान किया।

पर क्यों आज? मैं तो न गोरा हूँ, न नीग्रो। मुझे कोई क्या कहेगा? फिर थक गई हैं यहां दीवारें देखते देखते कुछ ताजी हवा चाहिए।

तो हम सब चलें साथ कार में। वहां चल कर काफी पीएँगे।

वार जाज, निल्डा और वह काफी और आईसक्रीम का आनन्द लेकर बैठे। घूम फिर कर बात फिर आ गई।

इन नीग्रो लोगों पर इतना गुस्सा आता है मुझे कि क्या बताऊँ। काम कर नहीं सकते, सारी कमाई शराब जुए में फूँक आते हैं। साल में एक के नहीं, दो बच्चों के बाप जरूर हो बन जाते हैं। फिर अपना

गरीबी मुकाबला के लिए गांग के प्र जग्रा मान है। दो चार को पुरा स धार दन है   जगला यहीं क।

'शी   शी   आज न निश्च्य का चुप किया। एक काला धड़क मगजान रख पर भुका बाद दन्ति ढक रहा था। नाजनीन बारी म पार मारे चम्मच चलाना रही अनमनी सी।

तुम्हारा क्या मत है नाज ? बाब न पूछा।

मेरा ! मन स क्या होता है बाब। समस्या समय क साथ उपजती है समय क साथ ही नष्ट होता है मत से कुछ नहीं होता।'

बाब न नासमझ-सा सिर हिला दिया।

"बात सीधी-सी है। जब स आइ हूँ बद रख पढ़ चुकी हूँ तुम्हारे समाचार पत्रों म भारत म गरीबी है लोग भूख मर रह हैं क्योंकि वहाँ अनपढ़ है आलस्य ह, भ्रष्टाचार है अन्धविश्वास है और सबस ज्यादा है उदासीनता। कोई कुछ करना धरना नहीं है अब यह हुआ अखबारी व्यक्ति का मन भारत की गरीबी के बार म। बताओ उसस क्या हल निकला। समस्या तो बनी रही वसी की वसी। किसी ने समाधान नहीं ढूँढा और समाधान स्थगित नहीं ढूँढा क्योंकि समाधान से सरल होता है आरोप लगा देना। मैं कहूँ कि गोर लोगों ने बुरा किया काले लोगों को यो इस्तमाल कर और बुरा किया रग नह कर था कि नीग्रो लोग बुरा कर रह हैं घृणा को अच्छा कर   । पर इन सब आरोपों स कुछ बनता नहीं   मैं तो उदास होकर रह जाता हूँ और प्राथना कर लेता हूँ कि हमारा अकाल गरीबी और तुम्हारा यह रग भद का कलश समाप्त हो जाए   । तुरत कुछ फिर आया है। नाजनीन न भर घूँ■ कॉफी गल म उतार ली है।

चलन लगे तो दरवाज म आशा स मुठभड़ हो गइ।

'ओह आप ! मैं कब स आपस मिलना चाह रही थी। सतोश यह ह हमारी डाक्टर दोस्त और यह सतोश गिल है इजीनियरिंग म एम०एस० कर रहा है। आप, कहाँ जा रहा है ?

'इन लोगों के साथ आई थी पर तुम कैसी हो आभा ?'

'अच्छी हूँ मैं तो। सुनिए आपको फुरसत हो तो रुक जाइए न सतीश अपनी कार में पहुँचा देगा ?'

ये लोग दरवाजा रोक खड़े हैं और बाहर से कुछ लोग भीतर आना चाह रहे हैं नाजलीन असमंजस में है।

'क्या नहीं नाज तुम रुको। बस अकेले अभी कुछ दिन कहीं मत जाना।

'धन्यवाद' जाज कल मिलेंगे। बाब लिण्डा ! कॉफी के लिए शुक्रिया।

आभा सुन्दर दिख रही है आज। सिल्क की बादामी साड़ी पर बड़े बड़े फूल छपे हैं, गहरे ब्राउन। गले में उसी रंग के पत्थरों की माला है। एक चोटी किए है। बाल कुछ बिखरे हुए हैं। सतीश के साथ चलती अच्छी लगती है। लम्बा है वह इकहरा लेटेस्ट कट का सूट पहने है। नाजलीन कुछ और छोटी हो गई है, कुम्हला गई है।

'पढ़ाई कैसी चल रही है ?'

'ठीक ही है, जमने जमने समय लगेगा। आपका कैसा चल रहा है ?

अच्छा है बड़ा अच्छा मनोरंजक है। डाक्टर लोग भी अच्छे हैं। फिर चिकित्सा के संसार में तो हर समय कुछ-न-कुछ नया बना रहता है।

तुम्हारे घर पर तो सब ठीक है आभा ? पत्र आया होगा ?'

हाँ आया था। एक महीना हुआ। भैया को तो फुरसत नहीं होती। भाभी हैं सो उन्हें हमारी याद क्या आएगी ? छोटा भतीजा है माडर्न स्कूल में पढ़ता है आठवें में। उसने लिखा है। माउथ आर्गन मंगाया है। एक एलविस प्रेसले का रेकाड ।

मम्मी डैडी ?'

उन्हें तो छः साल हो गए कार एक्सीडेंट हो गया था आगरा जाते समय ट्रक से।

आह!

'आप कहाँ रहता है?' सतीश ने पूछा इस बार।

ज्यादा दूर नहीं, कनाट प्लेस और यहाँ के लगभग बीच में एक अपार्टमेंट मिल गया अच्छा सा। चलो न, हम लोग वहीं बैठ कर बात करेंगे।

आभा को अपार्टमेंट बहुत भा गया और भारतीय पकड़ और भी ज्यादा। मचल कर बोली, "डाक्टर दादा, इतनी बड़ी जगह अकेले लगता हो तो हमें रख लीजिए न?"

'अरे जरूर। मैं तो कहने ही वाला था। अकेले अच्छा नहीं लगता। महँगा भी बहुत पड़ता है। सोचता था कि शायद तुम्हें किसी ऐसी लड़की का मालूम हो जो शेयर करना पसन्द करे।

'किसी और को क्यों, मैं तो हूँ। मैं तंग आ गई हॉस्टल में। यहाँ अच्छा रहेगा। क्यों सतीश?

तुम जैसा चाहो। हमारा आफिस भी तो यहीं से पास ही है। अच्छा है।

आभा अपने दो सूटकेस लेकर आ गई। पन्द्रह तारीख को सतीश छोड़ गया है। रात में सोफे को खोलकर पलंग बना नाजनीन सो जाती है। पलंग पर आभा का साम्राज्य हो गया है। बाथरूम में भी उसका ब्रश, कंघा, पेस्ट, क्रीम, लिपस्टिक, पाउडर, सेंट, नाइट गाउन, स्लीपर, शावर कैप, स्पंज, मैले कपड़े, रसोई में उसके बिन धुले कप, प्लेटें, बिन पढ़ी पुस्तकें, बैठक में उसके कुछ ग्रामोफोन रेकार्ड, बेडरूम में उसकी पच्चीस तीस साड़ियाँ, चार कोट, सात स्वेटर, तीन सैन्डल्स, दो हाउस कोट, चार काले सफेद लाल पर्स और रेजगारी, पुराने पत्र, कुछ चित्र भतीजे और भतीजी के अच्छी तरह फैल गए हैं।

नाजनीन ने चाहा आभा उसे नाजनीन ही कहे, डाक्टर दादा नहीं, पर आभा की आदत छूटती नहीं। नाजनीन भी जोर नहीं देता। अब दीदी से बचपन लगता है और "डाक्टर में जो आदर

रहता है वही इन वनस्तीव फनी पुस्तका, ढर लग मन कपडा, अन-धुल बतना या बुरा नहा मानन देता। सतीश क इधर-उधर छोडे सिगरट क टुकडो को भी माफ करवा लेता है और कभी सनाश की गाटा नाचे रखो हा ता भिभक जा परा को किसा अन्य दिशा म ले जाती है और बाहर खाने पर जा दो-तीन डालर लग जात है उन सबको भी सह लेन देता है और आभा मस्त है। वह जावन स बन्ला ल रहा है।

जानता हो दीदा भाभी हम फिल्म देखन नहीं दना थी। कहनी था बिगड जाएगी। बिना बाहा का ब्लाउज नहीं पहनन देना थी। अब मा म तो कोइ नि कर ल भाई भाभी स कमे कर और ता और हम इन्द्रप्रस्थ म जानती हो उस चिडियाघर मे पढन भेजा। कालेज की बस स जाओ और उसा से आओ। बडा मन जलता था और जानती हो हम उन्हे क्या कहत थे अपना भाभी को ? ललन।

वह क्या होना है ?'

लाला लागा के घर की यानी कुछ गवार कुछ अनपढ।

तुम ता पूरा बच्चा हा आभा।

नहीं दीदी तुम नहा समझागी। ईसाइ लागा म ता य सब रस्त्रिवशस नहीं होनी ।

नाजनान ने मुह फर लिया है। कल पापा का पत्र आया है। मेरी प्यारा नीनी तू जहाँ रह याशु की छाया तुझ पर बना रह। उसकी रोशना तुझे रास्ता द ।'

नाजनान आज चिन्तित है। सतीश बहुत दिन स नजर नहा आया है और आभा के रग-ढग ठाक नजर नहा आत। कल बहुत रात गए लौटा थी आभा और लगता था पीए है। सीढ़ियों पर उसक मित्र देर कुछ दर हगामा मचात रहे थे। फिर वाय वाय टा टा आज सुबह स वह सिर दद लिए बिस्तर म पडा रही। नाश्ता नहा किया। बाली भी नहीं। नाजनीन हस्पताल से लौटी तो लगा आभा

आज स्कूल भी नहीं गई पउन। अमन की नाजनीन ने आभा के ग्रामो फोन पर एक रेकार्ड लगा दिया है।

कब तक यह रोना सुनती रहोगी दीदी? नाजनीन दो थैलों में साग पोन का सामान लेकर आई है खड़ी वह रही है। रेकार्ड उतार नाजनीन ने ग्रामोफोन बन्द किया बोली नहीं कुछ भी।

कल मैंने कुछ मित्रों को बुलाया है डिनर अभी बाजार से आई हूँ।

हूँ! कौन-कौन आ रहा है?

विजय सुराना है और विजय सहगल व उसकी गर्ल फ्रेंड सुजी। तुम भी कुछ डाक्टर लोगों को बुला लो न। वह जो उस दिन आया था, नादिया वह अच्छा दीखता था।

अब मुंह कर पूछा नाजनीन ने, सतीश नहीं आएगा?

आभा ने खाने के लिफाफे रसोई की मेज पर टिका दिए। कुछ देर गुस्से में खड़ी रही। नहीं उसे नहीं बुलाया है। ब्रूट।

नाजनीन उठी, आज सच ही बहुत ज्यादा थक गई है। इतना तो पोर-पोर कभी नहीं दुखे। बीमार के बन रिरान कर फिज में कुरने लगी है। आभा हथेली में मुंह दिए खूब गुस्सा हुए बैठी है। पर नाजनीन में इतनी शक्ति भी नहीं कि कुछ पूछे। बक्र के लिए फ्रिज की छत पर चुन उसने कुछ बेरोनीना चावल पानी में भीगने के लिए छोड़ दिए हैं उबल चनों का दिया खोल रहा है। यहां छोर दंगा आज। भूख उसे नहीं है पर शायद आभा भूखी हो।

जानती हो डाक्टर दीदी यह सतीश का बच्चा पूरा पाजी है। इतना हमने उसके लिए किया और वह और बस उस कूनी पुन्नल के साथ डट पर गया। उसके लोग हम गए थे कि वह लाज्ज सेन का पता पूछ रहा था। गुस्सा भरे गालों पर टपाटप आंसू गिरते रहे थे। मैं सोचती थी, वह मुझे प्यार करता है। दम तो बड़ा भरता था। मैं सोचती थी।'

'क्या आभा ?

नहीं मालूम दीदी । ये लोग ऐसे ही होते हैं क्या ?

'जानती हो मैं क्या सोचती हूँ आभा ? तुम सोचती हो कि सब लोग तुम्हारा उधार खाए हैं कि तुमने उन पर दया दृष्टि कर दी है तो वे केवल तुम्हारे हो जाने चाहिए । मैं सोचती हूँ आभा तुम पाने की इतना अभिलाषी हो । देना तुम बिल्कुल नहीं जानती हो । देश की बात दूसरी है । वहां सामाजिक बंधन इतना है कि जो भी लड़का उन्हें थोड़ी अनुकम्पा करने लगे उसी पर लड़के जान देने को तैयार हो जाते हैं ।

यह दूसरा समाज है । यहाँ जिस लड़की को चाहे पटा-पटा ला । फिर एक से बंध कर कोई क्या बैठेगा ? बस तुमने सतीश को प्यार तो चाहा अपना भी दिया ? प्यार कितनी तरह का होता है—एक देने वाला ज्यों सूरज की गरमाई जिसे छू ले जीवन दे दे और देता रहे एक पाने वाला ज्यों पतझड़ कि अपनी बांह में सब समेटता चला जाता है, फूल पत्ता, रंग रौनक और देता कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं ।

आभा के आँसू रुक गए थे । काजल फैली आँखें आश्चर्य से फैल गई थीं । गोरा रंग राख हो गया था । एक अजीब घृणा भरा हास्य उसके होंठ छू गया । तिरस्कार से भर गया उसका जी ।

तुम ? तुम्हें ? तुमने कभी किया है ? जाना है ? तुम्हें क्या मालूम प्यार क्या होता है ?

नाजनीन का माथा बहुत तेज घूम रहा है । छत का लट्टू गिर पड़ेगा । अभी उबलते चावलों की भाप उसके नासापुट में भर गई है । लगता अभी उल्टी हो जाएगी । छोला का गिलास उसने अधभरा काउंटर पर छोड़ दिया ।

'आभा यह तुम बता लेना तुम ठीक कहती हो शायद ।

नहीं दीदी गुस्सा नहीं होओ मेरा मन ठिकाने नहीं ।

गुस्सा क्या होती है आभा ? मेरी जरा तबीयत

से परिचित भर भी हैं। यहाँ विद्यार्थी भी खूब है। लडके पर मेज रख जूते मेरा ओर कर बठते है, लडकियाँ बिना रुके धूम्रपान करते चाक्लेट च्यूइगम खाता रहता है। धुएँ म आँखें जलने लगती बठने का ढग बडा असभ्य लगता है पर अब आदी हो चला हूँ। क म प्रवेश करने पर य लोग खड नहीं होते और क्लास स जाते प नहीं। इसका भी अभ्यस्त हो गया हूँ। नहीं हुआ तो उन की म का, व उतनी ही जिद्दी है जितना माथ पर झूल जाने वाला बाला वह लट कितना ही उसे पीछे धकेलता हूँ फिर सामने आकर जाती है।

सुधा का चिट्ठी आज सुबह ही आ गई थी पर शाम तक पढने समय नहीं मिला। बुध को दो क्लासें पढाता हूँ दो सेमीनार स्वयं करता हूँ। अजुण्ट असिस्टण्ट का यह जीवन भी सहल नहीं। अब सुधा बहुत लम्बे पत्र लिखता है सब पन्नें भर कर भजती है। भर का बातें उसके पत्रों म रहती हैं। इसी से उन्हें मैं अपने स्नान के समय तक के लिए बचाये रखता हूँ। अमरीका म जब सां घिरने लगती है तब शायद ही कोई व्यक्ति थकावट अनुभव कि रह पाता हो। यहाँ की शाम अपने यहाँ की रंगीन शाम नहीं होत जिसमें कितने ही सवाद भर रहते हैं, बहुत पहल रहना है। यहाँ हुई कि प्राणों को अकेलापन डुबाने लगता है तकाधिन थकान है। ऐसी शाम म सुधा के पत्र खूब काम आते हैं। अपने कमर में बडा मेज पर आधा कच्चा उबला खाना खाता हूँ गले से उतारते म घर स आये पत्र पढ़ता हूँ और उड़ा के सहारे पहुँच कमरे म पहुँच जाता हूँ। कानों म छत का पंखा घर घर लगता है। छोटे बहन भाइयों का लड़ाई झगड़ा सड़क पर ट्रैफिक शोर रसोई घर म मा का इधर उधर जगाया छौंक मिश्रित सुगन्ध—सब पत्रों म सिमट कर कमरे म बिखर जाता है। लिखता तो पत्र समाप्त कर निगाह उठाने की साहस नहीं होता। लिख

बाहर का दृश्य बाहरी भयानक लगने लगता है पर बर्तन तो धोने होते ही हैं फिर भी चक्र भरने रिसने का काम तो चलता रहता ही है। साथ रात को कस कर लपेटता हूँ सिंक में जूठे बर्तन समेट गर्म पानी में साबुन घोल देता हूँ। बाहें ऊपर को मोड़ते सड़क के नियॉन बल्ब भूतहे-से लिखने वाले आकार बेंचों पर आलिंगन में जकड़े युवा शरीर देख लेता हूँ। सोचता हूँ कि अगला पत्र कब आयेगा? ऐसी प्यारी-सी चोटी बहन क्या सभी के होती है।

महँगाई कितनी बढ़ गई है राशन पर कितने जुलूस निकले, कहाँ-कहाँ लगे हुए बनारस में किस किस लड़की ने मटिनी शो देखा, क्लॉथ में क्या बना लिए मिसेज वर्मा का कैसा एक्सीडेंट हुआ एक हिन्दी का युवक लेखक स्कूटर के एक्सीडेंट में घायल होकर इरविन हस्पताल में पड़ा रहा और अन्त में काल का ग्रास हो गया डाक्टर छुट्टी ही मनाते रह गए, माई फेयर लेडी पर कितना झगड़ा चला—के नीचे सुधा ने लिखा "भैया तुमने जो पिछले महीने, स्वेटर और कास्मेटिक का पार्सल भेजा था वह अभी नहीं मिला है। मिल जाता तो अच्छा रहता रानी को देती वे इम्पोर्टेड चीजें। उसका ब्याह है, इसी दस तारीख को। रानी! भैया तुम जानते तो हो उसे? वही मेरी सहेली रानी उसकी माँ बहुत बीमार है। जल्दी में सब कर दिया है। कानेज भी नहीं आती। घर जाने पर भी मिलती नहीं किवाड़ ।

नहीं! न मेरे हाथ से कोटा ही छूट कर गिरा है न हृदय की धड़कन रुक गई है न ही अँधेरा आँखों के आगे आया है ऐसा सब वास्तव में उतना नहीं होता जितना लेखकों की लेखनी सजा करती है। बर्तन घटा हूँ। रानी, भैया तुम जानते तो हो उसे ।
जानता हूँ रानी को? पाँच फुट का गठा-सा शरीर गेहुँये रंग-सा सुनहरा रंग निशा-सी बाल जिन्हें हर रविवार को धोकर वह सुधा से मिलने जाती और ताजे शैम्पू की भीनी सुगन्ध से सबको भिगा जाती। वे बाल जिनको सूंघने पर मादक गन्ध होती थी, हल्की और मादक

ये लम्बी मनातमा उँगलियाँ ग्रौर उनके तराशे हुए गुलाबी नाखून। मया मैं जानता हूँ उस ?

रानी, राजा कौन है ?

सुधा ग्ग तरे भाई साहब छ" रह है। मैं फिर नहीं ग्राऊँगा।"

'भया, तुम बडे खराब हो। ग्राओ चलो रानी हम छत पर चलत हैं।

तुम चली जाती रानी पर वह लाल लपट पीछे रह जाती जो 'राजा' कहन ही तुम्हारे माथा पर तर जाती थी। वह शराब भी जो तुम्हारी काली पुतलियो क ग्रासपास डोरो म भर जाती थी ग्रौर सारे कमरे म छलक जाती थी।

गर्मियो की छुट्टियो का न बीतने वाली ग्रलसाई दोपहरें तुम्हारे ग्राने ग्रौर जाने के बीच तो कम्प करती थी। क्रम की पर पट के बीच तुम्हारा सुधा से कहना, 'वह रेकाड लगा दू' प्लाज।

सुन मरे बधु र सुन मरे मितवा सुन मर माथी रे।

रानी राजा मिला ?

'ग्राप फिर छेडन लगे सुधा ग्राती है, उनसे कहूँगी।

राजा का नाम बता दा फिर नहीं छेडूँगा।

प्रामिज ?

प्रामिज।

वह शीशा ग्रभी दराज म कहीं रखा है जिम तुम हाथ मे थमा भाग गइ थी। तुम्हारे पीछे भागता, मैं सारी शराब पी जाता, जिसे तुम इस निदयता से लापरवाही से जब-तब छलकाया करती थी। पर नहीं मैं खडा उस तुम्हारे राजा को देखता रह गया पानी पर झुका नार्सिसस। तब मैं कहा पहुँच गया था।

ग्राज तुमन, गुलाबी रग पहना होगा, रानी। गुलाब का पखुडी-सा गलाबी। ग्राज दस तारीख है। बालो म फूल सजाये होगे हाथो म फूलो के कगन गल मे फलो की माला ग्राज तुम महक गई होगी रात

रानी की भांति। मैं क्या वह रूप जानता नहीं? कितनी बार पलकों पर गुलाबों में डुबोकर तुम्हें उतारा है, तुम्हारी क्लियोपेट्रा नाक की नोक तक झीना घूँघट झुकाया है, माथे पर झूमर लटकाया है, हाथों की हथेली में मेहंदी रचायी है, तुम्हें दुलहन बनाया है, पर क्या तुम मुस्कराया भी रानी? क्या तुम शर्माया भी? ठीक वैसे जैसे मैं सोचा करता था? क्या तुमने लजा कर किसी गुरदर कंधे में मुँह छुपाया, राजा कहा?

सुधा तू बड़ी पगली है। कैसे तूने चाहा था कि आजो विवाह में उपहार देने का? नहीं, वह पार्सल तुझे न मिले, उसे किसी कस्टम वाले की कृपा ले जाए। रानी को वह मत देना। उसके नये जीवन में उसे भूल जाने दे, सुधा। वह सुखी रहे यही एक कामना उसे दे। उसे दुखाया ही तो हमने दिया क्या?

अपने यहाँ एम०ए० फर्स्ट क्लास के लिए नौकरी नहीं। ढेरों एम०ए० फिरते हैं, जिनके चाचा-मामा बड़े लोग हैं। फिर तीन-तीन लड़कियों के ब्याह से बौखलाया बेटे के गर्व से गर्वित मेरा पिता, जातिगत कट्टरता में जकड़ा तुम्हारा भाई, ब्राह्मण और बनिये जोशी और अग्रवाल परिवार कैसे एक सूत्र में बंध सकेंगे। तुम जानती थीं, मैं भी। मैं, जो उपन्यासों पर पला था, तुम फिल्मी गानों में रची थीं, भावुकता से बनी थीं।

देखो मेरा अप्वाइंटमेंट आ गया है, अमरीका से।

'हाँ भैया अब मेम लेकर आयेंगे बड़ा मजा रहेगा।'

सुनकर जो बादल तुम्हारे मुँह पर झुक आये थे वे क्या हटे राजा? नहीं वे नहीं हटे। किसी सस्ते उपन्यास के नायक की तरह मैंने भी तुम्हारा आँसू भीगा रूमाल उठाकर रख रखा है। आँसू सूख गये हैं और हर दाग काले हो गये हैं। उस रूमाल से आँख और नाक तुमने साथ साथ पोंछा था। रूमाल? सकड़ा रूमाल सा वह एक रूमाल। और घर घर घूमने वाला मेरा यह घिसी पिटी आत्मकहानी?—

प्रगति में हम खूब विद्वान हैं सत्य को जानते हैं। हम भौतिकवादी नहीं हैं सूक्ष्म पर नजर रखते हैं। आत्मा का ज्ञान है इसी से मस्तराम हैं। हम मस्त हैं सदियों की हमारी परम्परा है। हम बहुत शुद्ध हैं बहुत समृद्ध भी हैं। मन्दिर का पुजारी दूसरे मन्दिर के पुजारी से छिटकता है छूकर नहीं चलता तो क्या हम बहुत निष्ठावान हैं।

हमारे यहाँ लड़के लड़कियाँ नहीं सुनते लड़कियों के आने की आवाज भी कमरे के पीछे उल्टे लटकते 'साउन्ड' या मम्बर पढ़ते हैं। शायद हुआ तो साथ से अधिक पश्चिम कुण्ठाग्रस्त रहने लगा है। हम सभी कुण्ठारहित हैं स्वस्थ हैं। सेक्स को हमने बन्दी रखा है उसे हावी नहीं होने दिया है। शरीर हमारा पंक है केवल आत्मा पंकज और प्रेम की गंध से हम नाक सिकोड़ते हैं, इसे कीचड़ का मानते हैं कमल का नहीं। हम फैक्टरी से इन पुटवाते हैं जो लड़की वालों के हो जाते हैं या लड़के वालों के। नहीं हैं तो हम इन्सान नहीं हैं।

अगर रात के दो नहीं बज रहे होते तो तुम्हें फोन करता जूही। तुम्हें बुलाता और फिर साथ साथ हम वहीं जाते। बस तुम और मैं अपने घर में। तुम्हारे यहाँ शरीर पंक नहीं है न, दलदल नहीं है वह सुपर हाईवे है जहाँ से जो भी होकर गुजर जाए निशान नहीं रहता, गति बनी रहती है, बिगड़ता कुछ भी नहीं। तुम्हारी वे नीली हरी आँखें जानती हो क्या कहती हैं? वे मुझे शरारत [illegible] देती हैं जूही। लगता है हाड़ मांस रक्त का बना हूँ। इतना ऊँचा हूँ, इतना चौड़ा हूँ लगता है मेरे दो हाथ हैं, दो आँखें हैं, हाथ पैर हैं। लगता है इन्सान हूँ किसी का देवता नहीं शरीर में सरसराहट भी होती है और उस सरसराहट में वह दर्द नहीं है जो गहरे-गहरे चुभा करता था। वह छटपटाहट नहीं है, जो टीसती थी, चुभती थी, रुलाती थी, माथा फोड़ फोड़ लेने को विकल करती थी। इस सरसराहट में उबलते पानी के बुदबुदों सा हल्का शब्द है भाप की नमी है और कुछ भी नहीं। यह

केवल रक्त है जो रक्त को टरता है, जूडी यह निष्प्राण भी है।

तुम देह हो, जूडी, जानती हो वेहद वला की देह। और शुक्र है कि तुम्हारे वक्ष का उभार सबके देखने को है तुम चलती हो तो खुली टाँगो को लोच देकर। शुक्र है जूडी, तुम्हारी स्वस्थ सुदर देह किसी किमखनी सलवट भरी सब छुपा-ढक लेने वाली साडी मे नही लिपटी है। तुम्हारी देह नही और प्राण नहीं रहने हैं। दो को तुमने दो नही जाना है, एक पाया और एक ही समझा है वरता है। तुम ग्रवश नही विवश नही, और यह क्या कम है जूडी, यह क्या कम है कि तुम अपने मन की हो, केवल अपने मन की ?

हम मोहरे दिन रात के

हम मोहरे दिन रात के

उसकी चेतना लौटी तो वह सूनी आँख से कमरे की सफेद दीवारें देखती रही। याद के फलक पर कोई भी चित्र उभर नहीं रहा था। सूनी आँखों-सी सूनी दीवारें और दीवारों सा ही सूना उसका स्मृति पटल। फिर एकाएक बिजली-सी चमकती वंदना की एक तस्वीर उसके सारे शरीर में कराह गई। अपने हाथ से उसने इस तरह आँखें बन्द कर लीं ज्यों रोशनी रोक देने से उसकी कसक भी रुक जाएगी। कुछ देर वह उसी मुद्रा में साँस रोके पड़ी रही पर हारती हुई सी। स्मृति-पटल पर पूरी बारात की तरह पिछले तीन महीनों का उसके भीतर चलता मानसिक द्वन्द्व एक साथ संचालित हो गया। बड़ी हारी सी थकन भरी साँस छोड़ उसने आँख पर से हाथ उठा माथे से उलझे बाल पीछे सरकाए और दरवाजे पर पड़े मलमल के लाल पर्दे के पीछे हस्पताल की दिनचर्या की आती आवाजों को सुनने का यत्न किया। पर कुछ क्षण में ही जूतों की फट फट और मरीजों का शोर गुल विलीन हो गया। चाहते हुए भी उसे लगा वह कुछ सुन नहीं सकती है। उसे लगा वह एक वैक्यूम में है एक दम अकेली कोई उसके साथ है तो सिर्फ उसका दिन रात चलता भीतर के विचारों का महायुद्ध।

इस बीते सप्ताह कितनी बार उसने इस ग्लानि को बार बार जिया है जिसकी लज्जा मिटाने वह इस हस्पताल में आई और हर बार वितृष्णा से भर गए अपने मन को उसने किसी कलुष धो देने वाली गंगा में, निर्मलकारी त्रिवेणी में डुबा देना चाहा। वह कुछ देर इंतजार-

उसकी चेतना लौटी तो वह सूनी आँख से कमरे की सफेद दीवारें देखती रही। याद के फलक पर कोई भी चित्र उभर नहीं रहा था। सूनी आशा-सी सूनी दीवारें और दीवारों सा ही सूना उसका स्मृति पटल। फिर एकाएक बिजली-सी चमकती वेदना की एक तलवार उसके सारे शरीर में कराह गई। अपने हाथ से उसने इस तरह आँखें बंद कर ली ज्यों रोशनी रोक देने से उसकी कसक भी रुक जाएगी। कुछ देर वह उसी मुद्रा में सांस रोके पड़ी रही, पर हारती हुई सी। स्मृति पटल पर पूरी बारात की तरह पिछले तीन महीने का उसके भीतर चलता मानसिक द्वंद्व एक साथ सचालित हो गया। बड़ी हारी सी थकन भरी सांस छोड़ उसने आँख पर से हाथ उठा माथे से उलझे बाल पीछे सरकाए और दरवाजे पर पड़े मल से नीले पर्दे के पार हस्पताल की दिनचर्या की आती आवाजों को सुनने का यत्न किया। पर कुछ क्षणों में ही जूतों की पट पट और मरीजों का आर्त गुल विलीन हो गया। चाहते हुए भी उसे लगा वह कुछ सुन नहीं सकता है। उसे लगा वह एक वक्यूम में है एक दम अकेला कोई उसके साथ है तो सिर्फ उसका दिन रात चलता भीतर के विचारों का महायुद्ध।

इस बीते सप्ताह कितनी बार उसने इस ग्लानि को बार-बार जिया है, जिसकी लज्जा मिटाने वह इस हस्पताल में आई और हर बार वितृष्णा से भर गए अपने मन को उसने किसी कलुष धो देने वाली गंगा में निर्मलकारी त्रिवेणी में डुबा देना चाहा। वह कुछ देर इन्तजार—

सा करता रहा कि शायद वह पुराना ग्लानि फिर सिर उठाकर उस पासगा या उस पर हमला पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। कुछ विस्मय से यदा स दूर भागना भागता वह रुको और अपने को नजदीक से देखा और धार धार तीव्र होता वगी हा करुण रुलाई से उसका कलेजा ऐंठने लगा।

वह और दिन की तरह उस दिन भी आफिस से आ अपने घर के ताना कमरों में उस तरह-तरह के पौधों को सींच रहा था। पौधों की देखभाल प्रतिदिन का घट का काम था। वह हाथों की मिट्टी में सान तक ढ्ठते से फिनाइल्प्लान में नई मिट्टी और खाद डाल उसे मनान का यत्न कर रही था। बाहर कोलाहल सुन खिड़की में आई तो कई व्यक्ति एक व्यक्ति को उठाए उसके घर की ओर चल आ रहे थे। समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है। शकित मन से द्वार खोला तो रमन था। अचेत। वाहकों ने बताया उसे नई दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर गश आ गया था और उसने यही पता उन्हें दिया था। बैठक के दीवान पर रमन को लिटा और उसकी अटैची को वहीं बीच में रखकर जब सब लोग चल गए तो उसे एकाएक कुछ भी सूझ नहीं रहा था। डाक्टर आया इंजक्शन देकर बोला बीच-बीच में खबर करता रहें।

रात भर वह दीवान के पास कुर्सी डाल बैठी थी। बार-बार अंधेरे में डूबता रमन कभी कभी आख खोल उसकी ओर देख लेता पर उसको देखने में पहचान नहीं थी। वह समय पर बुखार नापती दवाई देती सोचती क्यों उसके दिल में कुछ भी हलचल नहीं है। और उसे स्वयं पर गर्व होता कि जीवन में जो व्यक्ति अपना हो पराया हो गया अब मृत्यु में उससे क्या लेना देना। फिर भी विधि के इस क्रूर संयोग पर वह विह्वल हो जाती, क्षणभर को दवदाह उसकी स्मृति में कौंध जाता। पर उसने कसम खाई थी कि वह कभी अपने को कुछ भी महसूस करने नहीं देगी। फिर वैसी ही यंत्रवत हो वह उसकी चेतना लौटने का

चाट दगती रही । वठे-वठे वह वही सो भी गई । जब आंख खुली तो वह उमकी ओर देख रहा था चुपचाप ।

'अब तबीयत कसी है ? कुछ वहने के मकन से कहा उमन । लगता है बहुत देर सोया ।'

यह एकाएक हुआ कसे ?'

'काम से आ रहा था, अम्बाले से ही तबीयत घबरान लगी, स्टेशन पर उतरा तो खडा नहीं हुआ गया एक यही पता याद ।

डाक्टर आया, देख गया । बोला, दो-तीन दिन अभी बडे रेस्ट की जरूरत है कहीं भी आना जाना नहीं । सुनकर दोनों गुमसुम हो गए थे । वहां बोली थी 'आपके यहां तार भेज दूं क्या या टेलीफोन ?"

"नहीं, उसकी जरूरत नहीं है । कुछ देर दोनों फिर चुप रहे, एक दूसरे से कुछ कहने की प्रतीक्षा-सी मे । तुम्हें परेशानी होगी, आफिस भी तो जाना होगा ।

छुट्टी ले ली है, उसने बात काटी ।

करुणा ।

चाय का पानी सारा जल जाएगा " वह वह वहां से चली गई और वह रसोई की खटपट मे व्यस्तता ढूंढती रही । कितने वर्षों बाद यह मनुहार मनुहार से अधिक क्षमा प्रार्थना क्या ! वह खीज उठी थी अपने पर, अपनी स्थिति पर । फिर कुछ आश्वस्त हो वापस कमरे मे आ गई थी । आश्वस्त कि जिस मधुशाला एम० ए० के लिए एक दिन जो धर्म और समाज की दृष्टि से उसका था, पराया हो गया वह मधुशाला अभी भी ५ ७ सौ मील के फासले पर अपनी धरोहर के प्रति निश्चिन्त प्रतीक्षा मे होगी ।

दिन छोटी-मोटा उखेडबुन बिस्तर के कपडे बदलने शव का पानी गर्म करने मे दोनों के बीच से हो तिरोहित हो गया । शाम का वन्दी खिडकी के पीछे छिपते सूर्य को विदा कर चिनकबरी चिडियों का समूह भी आंगन मे जब चला गया तो उसे उठ ही जाना पडा ।

की बात छेड़ेगा वह जानता था। और रचना की बात उठाना उसे जरा भी नहीं रुचता। उसका न चाहते भी जी ऐंठ जाया करता है।

रचना अभी वनस्थली में ही रहेगी क्या ?

क्या ? वह कड़वी हुई।

'यूँ' ही। तुम्हें अकेला नहीं लगता ? शब्द लौटाए नहीं जाते। स्वयं उनकी कचोट से रमन ने आँख बन्द कर ली थी। वह बैठी रही। रात गए उठी तो वह सोया नहीं था। बोला "करुणा मैं सुबह की गाड़ी से लौट जाऊँगा।

डाक्टर ने कहा है दो दिन ।

डाक्टर तो यूँ ही कहा करते हैं।

कहने को हुई हाँ वह इंतजार भी तो कर तो हारा। पर कहा नहीं।

दो घंटे पश्चात दवा देने आई तो वह सोया नहीं था, तकिए के सहारे बैठा ही था। दवा देने दो।

ऊपर ! वह ... देख। वह उसकी ओर देख रहा था एक तारा नजर से जाना पहचाना नजर से। उस नजर की चुभन उसके शरीर ने ग्यारह बरस झेला था और छः वर्ष के अंतराल के उपरान्त ... इस नजर के मतलब को पहचानता था। एक घटघुटना गुस्सा उसके भीतर दौड़ने लगा। वह वहाँ बुत सी खड़ी रही। वह उसकी ओर बस चख जा रहा था तीखी नजर से जिसकी चुभन उसके वर्षों से पत्थर हो गए हृदय और विधवा हो गए शरीर को छेदता चला जा रहा था। गुस्सा सख्त बोला, "दवाई ले लीजिए, देर हो रहा है। दवाई का शीशा और चम्मच पकड़े उसके हाथ पर रमन ने हाथ टेक दिया था। रुँधा-सा बोला, "करुणा। वह ठिठक कर स्वाद मेज पर रख पलट से जाने को उद्यत हुई। मेज से चम्मच झनझनाता-सा फर्श पर आ गिरा था। मुड़ी तो वह उसकी ओर दो कदम बढ़ चुका था ... पसार।

गर्मी के किसी उमस भरे दिन ज्यों बादल एकाएक कहीं स आकर र वेग से बरस जाता है, व जितना तजी से पास आए उसी तजी रीत गए, पर गर्मी के बादल स ही दुबारा घिर कुछ दर लगातार रसन का।

उमके जाने के कद सप्ताह पश्चात जब उसके शरीर स रमन के वर म उष्ण शरीर का स्पश मिट चुका और केवल स्पश का याद ह गई वह घटा अपन का सालता रहा थी। वह इतना कच्चा कसे ा गई था। रमन उसे किसी और के लिए छाड गया इस बात का ुस्सा न भी सही पर उसक आत्मसम्मान का क्या हुआ। आखिर यह ा हुआ वह क्या मात्र दवा शारीरिक भूख थी, या कि निश्चित पराजय के सामन क्षण भर का विजय के लिए यह उसके नारी मन का इ तकाम था? और रमन क मन म क्या था? क्षमा प्राथना-सी उसकी नम ाँखें और क्षमा प्राथना सा उसका यह आचरण, जा शब्दा स कहना असम्भव था, उसे क्या वह अगो स कह गया है। क्षमा, क्षमा क्षमा! या मत्यु क निकट आतकित हा वह जीवन म जीवन खाज रहा था। या कोइ नीच वत्ति उसे उद्यत किए थी जानन भर का कि इतन वर्षों बाद भी उसका करुणा के अतरग पर वहा राज्य है कि नहा।

कुछ और सप्ताह टलने तक तो समभन को कुछ रहा ही नहा रह गई लज्जा भय और एक भयानक राष अपन पर। उस लगता धरती फट जाए और वह उसमे समा जाए या कुछ खा कर सो जाए। पर डाक्टर उसकी मित्र थी।

चादर क नीचे हाथ स उसन अपना शरीर बहुत टटाला। उस अपना शरीर बहुत खोखला और बाँझ-सा महसूस हुआ और मना हुआ। एकाएक मार के पख-सा फटफना कर विक्षोभ उसके भीतर आन्दोलित हो गया। उसे क्या हक था जीवन के विनाश का? और यदि वह अपनी हार का अस्वीकार कर देती ६ वर्ष तक स्पन्दन का घोंटती नहीं तो उसे हस्पताल आना ही क्या पडता। जीवन जा

जीवन के निर्माण में, दिन रात की शतरंज पर इंसान को निर्मम मात देता रहा है जीवन जिसमें नैवेद्य सा जल कर ही हम जीवित रह सके हैं, कुछ सावलें चटा दने मात से रुक तो नहीं गया। विकार बन कर सही पर पनपा तो। अपनी बेटी को जन समाज की बुरी नजर से बचाने के लिए जो देश निकाला उसने दिया है उसका भी ना जाने क्या बदला उससे जीवन ले। उसे लगा उसके स्तन कचोटने लगे और उसका शरीर प्रसव पीड़ा क्रन्दन का वचन हो उठा है।